वीरानगढ़

जहाँ ख़ामोशी भी चीखती है

रितु जरवाल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ritu jarwal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-803-9

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: January 2026

अनुक्रमणिका

Chapter 1: रहस्य भरा गाव 1

Chapter 2: पायल की आवाज़.. 4

Chapter 3: मुलाक़ात 6

Chapter 4: एक और मौत... 9

Chapter 5: बाबा का राज 13

Chapter 6: किताब का रंग बदलना 17

Chapter 7: अतीत का सामना.. 23

Chapter 8: अतीत मे मोहिनी.. 29

Chapter 9: माहिरा का प्यार है 35

Chapter 10: बर्थ मार्क.. 40

Chapter 11: मोहिनी की अंतिम चेतावनी 43

Chapter 12: श्राप की गूँज.. 46

Chapter 13: डर और नज़दीकी 49

Chapter 14: सच का खुलासा 52

Chapter 15: मोहिनी का सच.. 56

Chapter 16: अधूरा इज़हार.. 60

Chapter 17: अग्निपरीक्षा (Final Arc Begins).......................... 63

Chapter 18: "अग्निकाल: श्राद या मुक्ति 68

Chapter 19: “अंतिम पहर की दहशत” 71
Chapter 20: “गायब मोहिनी और रहस्य की तस्वीर”....................... 75
Chapter 21: वापस कौन आया है ? 79
Chapter 22: “सकून का साया” 83
Chapter 23: “सपनों का दरवाजा”... 88
Chapter 24: “समापन या शुरुआत?... 93

CHAPTER 1:
रहस्य भरा गांव

मरने के बाद क्या कोई भूत बन जाता है? क्या कभी आपने इन्हें रात के सन्नाटे में महसूस किया है। यदि कोई इसमें फंस जाए तो उसके साथ क्या होता है कभी सोचा है।

वीरानगढ़ गांव में आज राज और नंदिनी की शादी हुई थी। नंदिनी बेहद खूबसूरत लड़की थी उसकी झील जैसी गहरी आंखें और गोरा बदन चांद की चांदनी में चमक उठता था। यदि उसे कोई देख ले तो पल भर के लिए उसकी खूबसूरती में खो जाए.. वही राज काफी खुश था उसकी शादी बेहद खूबसूरत लड़की से हुई थी।

आज दोनों की सुहागरात थी| राज कमरे में खिड़की के पास खड़ा एक टक चांद की ओर देखे जा रहा था। तभी नंदिनी कमरे में आ जाती है और राज को पीछे से गले लगा लेती है नंदिनी के इस हरकत पर राज उसे हैरानी से देखता है राज कुछ बोल पाता उससे पहले ही नंदिनी ने अपने होठों को राज के होठों पर रख दिया, राज नंदनी को अपने से थोड़ा दूर करते हुए बोलता है........ मैं तो तुम्हें बहुत शरीफ समझता था| मुझे नहीं पता था कि यह भोली-भाली दिखने वाली लड़की अपनी सुहागरात पर इतनी बेकाबू और बेसब्र हो जाएगी।

मैंने तुम्हारा यह रूप पहले नहीं देखा राज की इस बात पर नंदिनी खिलखिला कर हस्ती है और फिर से उसके करीब आ जाती है आज नंदिनी के चेहरे पर एक अलग-सी चमक थी। अब राज भी खुद पर काबू न रख सका और दोनों एक दूसरे में खो गए तभी राज का फोन बजता है दोनों एक दूसरे में इतने खोए

हुए थे। फोन बजाने का किसी को पता ही नहीं चलता है थोड़ी देर में फोन फिर से बजता है इस बार राज ने फोन उठा लिया।

वही पीछे नंदिनी बेताब हो रही थी जैसे ही फोन कटता है नंदिनी राज को बेड पर गिरा देती है और फिर से धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे में सामने की कोशिश करते हैं तभी वहां कमरे में कुछ ऐसा होता है जिसे देखकर राज चौंक जाता है उसे लगता है यह नंदिनी नहीं बल्कि उसकी शक्ल में कोई और है अब राज उलझन में पड़ जाता है

वह सोच ही रहा होता है तभी नंदिनी राज के कपड़ों से पड़कर उसे अपनी ओर खींच लेती है और बोलती है क्या हुआ राज क्या सोच रहे हो आज तो हमारी सुहागरात है फिर यह झिझक कैसी नंदिनी की है बात सुनकर राज फिर से उलझन में पड़ जाता है कुछ देर बाद उसे कमरे से एक तेज चीखने की आवाज आती है।

उस चीख को सुनकर उस हवेली का गार्ड, मैनेजर और वीर सिंह दौड़कर उस कमरे की ओर आते हैं जैसे ही कमरे का दरवाजा खोलते हैं मैनेजर राज को देखकर बोलता है **अरे!!! "यह राज बाबू को क्या हो गया"** वीरसिंह राज को देखकर चौंक जाता है और धीरे से राज के पास जाता है और गौर से देखकर **'मन ही मन में बोलता है राज बाबू को देखकर ऐसा लगता है जैसे इन्हें मोहिनी ने मारा पर ऐसा कैसे हो सकता है''** तभी वीर सिंह दौड़कर हवेली के बाहर जाता है।

चीख इतनी तेज थी कि उसे सुनकर गांव के आसपास के लोग हवेली के बाहर आ जाते हैं और आपस में फ़ुसफ़ुसाते हुए बोलते हैं क्या हुआ भाई!!!! यह चीख किसकी थी। चीख तो यहीं से आई थी तभी वीर सिंह बोलता है

राज बाबू और उनकी पत्नी को मोहिनी ने मार दिया। यह सुनकर गांव वाले हैरानी से पूछते हैं ऐसा कैसे हो सकता है मोहिनी कैसे मार सकती है हमने तो शादी में वह सब किया था जिससे मोहिनी यहां ना सके फिर यह कैसे हुआ।

तभी वीर सिंह और गांव का मुखिया दोनों एक साथ बोलते हैं **"जल्दी से केरोसिन तेल डालकर सिंदूर वाली चुन्नी को जला दो अगर वह यहां होगी तो भाग जाएगी"** अगले ही पल अचानक से मौसम का मिजाज बदल जाता है

तेज हवा चलने लगती है सभी एक दूसरे को देख रहे थे तभी एक चीखने की आवाज आती है और साथ ही मन को कंपकंपा देने वाली रोने की आवाज सुनाई देती है।

वीर सिंह बोलता है वो यहां से चली गई है अब आप लोग भी अपने घर चले जाइए और सो जाइए अब मौसम भी पहले जैसा शांत हो गया था।

CHAPTER 2:
पायल की आवाज़

वीरानगढ़ की इस घटना के लगभग 15 दिन बाद शाम को 5 बजे वीरानगढ़ के स्टेशन पर ट्रेन आकर रुकती है ट्रेन में नितिन सोया हुआ था अचानक से उसकी आंख खुल जाती है। नितिन 25-26 साल का हैंडसम लड़का हैं वो दिल्ली से यहां किसी काम से आया था|

वो खिड़की के बाहर झांक कर देखता है तो उसे महसूस होता है कि स्टेशन पर कोई नहीं और शायद ट्रेन में भी वह अकेला ही है इसलिए वह ट्रेन से उतर गया स्टेशन को ऐसे खाली देखकर नितिन सोच में पड़ गया था।

इतने में उसे पायलों की आवाज सुनाई देती है वह डर गया था ये डर नितिन के चेहरे पर साफ देखा जा सकता था तभी एक हाथ उसके कंधे पर आता है जैसे ही वह पीछे मुड़कर देखा है तो वहां कोई नहीं होता है नितिन हड़बड़ी में अपना बैग उठाता है उस स्टेशन से बाहर आ जाता है उसे बाहर भी कोई नजर नहीं आता है यह सब देखकर नितिन हैरान हो गया था आखिर पूरा स्टेशन खाली कैसे हो सकता है?? यहां कोई क्यों नहीं है????

ऐसे सवाल नितिन के मन में उठ रहे थे। तभी वहां एक ऑटो वाला आ जाता है नितिन ऑटो वाले के पास जाकर बोलता है **"भैया मुझे मंदिर के पास वाली हवेली पर जाना है'** नितिन के मुंह से हवेली के बात सुनकर ऑटो वाला चौक जाता है और बोलता है|

"भैया जी आप काहे वहां जाना है अपनी जान प्यारी है तो यहां से चले जाओ"

आपको नहीं पता है वहां रात में कोई नहीं जाता है वहां जाना माना है और जो गया है वह कभी वापस नहीं आया उस हवेली में मोहिनी रहती है आप गए तो आपको भी मार देगी ऑटो वाले की बात सुनकर नितिन झलाते हुए बोलता है क्या बात कर रहे हो आज के टाइम में ऐसा कुछ नहीं होता है तुम्हें जाना है तो चलो वरना मैं कोई और देख लूंगा।

नितिन के इस बात पर ऑटो वाला बोलता है **'भैया जी हम तो नहीं जाएंगे और आई बखत आपको कोनो और भी नहीं मिलेगा हमारी मानिए तो आप भी मत जाईए'**

नितिन ऑटो वाले के बातों पर यकीन नहीं करता है और अकेले ही आगे बढ़ जाता है और वह चलते-चलते हवेली के सामने आकर खड़ा हो जाता है नितिन अंदर जाने वाला होता है तभी पीछे से एक आवाज आती है मत जाओ अंदर अगर जाओगे तो मारे जाओगे वह पीछे मुड़ता है तो वहां एक 32-33 साल का आदमी होता है नितिन बोलता है

नितिन के इस बात पर वीरसिंह अपना परिचय देते हुए बोलता है मेंरा नाम वीर सिंह है और मैं इस गांव का सबसे समझदार आदमी हूं मेरी बात को कोई नहीं टालता है तुम तो शहर से आए हो और समझदार भी लगते हो उम्मीद है तुम मेंरी बात को समझोगे और अंदर जाने की गलती नहीं करोगे इतना बोलकर वीर सिंह आगे बढ़ता है

तभी नितिन पीछे से झल्लाते हुए बोलता है तुम तो खुद को सबसे समझदार बताते हो उसके बावजूद भी तुम इन सब बातों पर यकीन रखते हो नितिन के इस बात पर वीर सिंह हंसता है.. वीर सिंह की हंसी नितिन को असमंजस में डाल रही थी| नितिन फिर से बोलता है हंस क्यों रहे हो? बोलते क्यों नहीं क्यों नहीं जाऊं मैं |

CHAPTER 3:
मुलाक़ात

अभी रात के लगभग 7-8 बज रहे थे। और ऐसा लग रहा हैं जैसे आधी रात हो रखी हो वीरसिंह नितिन को हवेली में जाने से रोक ही रहा था| तभी अचानक से तेज हवा चलने लगती है वहा जो सन्नाटा पसरा हुआ था वो घुंघरू की आवाज से टूट जाता है धीरे धीरे घुंघरू की आवाज तेज होने लगती है ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनकी ओर आ रहा हो| नितिन घुंघरू की आवाज सुनकर डर जाता है यह डर उसके चहरे पर साफ देखा जा सकते था|

तभी वीरसिंह बोलता है अपनी जान प्यारी है तो चलो यहा से कुछ देर और रुके तो मारे जाओगे|

यह बोलकर वीरसिंह अपने घर की ओर चल पड़ता है और नितिन भी बिना कोई सवाल किए उसके पीछे चल पड़ता है नितिन को ऐसा लगता है जैसे कोई उसका पीछा कर रहा है जैसे ही वो पीछे मुड़ के देखता है तो वहा कोई नहीं होता और जो हवा तेज चल रही थी वो भी बंद हो चुकी थी थोड़ी देर में दोनों वीरसिंह के घर पहुच गए|

वीरसिंह नितिन से बाते करते हुए उससे कमरे की ओर ले चलता है और पूछता है तुम यहाँ क्यों आए हो ओर ऐसा क्या है जो तुम इतनी रात में उस हवेली में जाने को तैयार हो गए| तुम्हें डर नहीं लगा अगर में आज वह नहीं आता तो तुम मर जाते|

नितिन बोलता है मैं यहाँ एक रिसर्च के काम से आया हूँ| मुझे उस हवेली में कुछ फोटो ओर वीडियो चाहिये | और आस-पास के लोगों से बात कर के सुबह की ट्रेन से वापिस चला जाऊंगा पर आप तो मुझे यहाँ लेकर आ गए|

वीरसिंह बोलता है ठीक है ले लेना लेकिन दिन में रात में नहीं| अब रात भी काफी हो गई है तुम सो जाओ वीरसिंह वहाँ से उठ के चल पड़ता है| तभी नितिन पीछे से बोलता है **"ये मोहिनी कौन है? और लोग उससे इतना डरते क्यों है|"**

वीरसिंह नितिन को देखते हुए गंभीर आवाज में बोलता है सूरज ढलने के बाद उस हवेली में कोई नहीं जाता है और जो गया है वो कभी वापिस नहीं आया मोहिनी ने उन लोगों को मार दिया|

नितिन को वीरसिंह की बातों पर बिल्कुल भी यकीन नहीं होता उसे ये सब बेबुनियाद सा लगता है| मगर वो कुछ नहीं बोलता है| कमरे से बहार निकलते हुए वीरसिंह बोलता है ये सब छोड़ो अभी रात बहुत हो गई है तुम सो जाओ बाकी कल सुबह बात करेंगे|

अगली सुबह नितिन उनीद भरी आंखों से जगा और अंगड़ाई लेते हुए| कमरे के बगल में बने बाथरूम में चला गया उसने ये भी नहीं देखा की बाथरूम में कोई था या नहीं वो तेजी से दरवाजा खोल के अंदर चल गया|

अचानक से एक तेज चीख आती है उसी के साथ नितिन की पूरी नींद खुल जाती है उसने देखा तो कोई लड़की नहा रही थी उस लड़की के साथ नितिन की चीख भी निकल गई| तभी लड़की हड़बड़ाकर बोली **" तुम क्यू चिल्ला रहे हो और तुम पहले यह बताओ तुम हो कौन???? और सीधा अंदर कैसे आ गए????"**

नितिन बिना कुछ सुने बस एक टक उसको देखे जा रहा था| और उसने पाया की लड़की ने बस एक तोलिए से अपने गीले बदन को ढक रखा था| लेकिन उसके गीले बालों से पानी टपक कर उसके रेशमी गोरे बदन पर अठखेलियाँ कर रहा था| उसके गुलाबी भीगे होंठ और परदे के पीछे से झाँकते उसके मुलायम कंधे नितिन को बेताब कर रहे थे|

उस लड़की के चिल्लाने से नितिन होश में आ गया था उस लड़की ने बोला **बड़े बेगैरत इंसान हो बताओ कौन हो तुम? और यहाँ वहाँ क्या देख रहे हो??? इरादा क्या है तुम्हारा?** नितिन ने अपनी नजर घुमा ली और बोलता सॉरी सॉरी मेंरा कोई गलत इरादा नहीं था| इतना बोलकर नितिन बाथरूम से बहार आ गया|

और बाहर से पूछता है तुम कौन हो| लड़की अंदर से गुस्से में बोलती है वाह!! जी मेरे ही घर में मुझसे पूछ रहे हो की मैं कौन हूँ| गुस्से में लड़की बाथरूम से बहार आती है और बोलती है बताते हो या मैं मेंरे भैया को बुलाऊँ| नितिन बोलता है में वीरसिंह जी का दोस्त हु वो ही मुझे कल रात अपने साथ यहाँ लेकर आए है||

अच्छा तुम हो वो नमूने जो आधी रात में उस हवेली में चले गए थे| इतना बोलकर वो लड़की अपने कमरे में चली गई तभी वीरसिंह आ जाता है और बोलता है तुम जग गए चलो तुम रेडी हो जाओ फिर तुम्हें मुझे मेंरी बहन से भी मिलवाना है|

CHAPTER 4:
एक और मौत

सुबह के 10 बज चुके थे। साथ ही खाना खाने का समय भी हो गया था। तभी वीर सिंह की आवाज आती है क्या बात है माहिरा आज हमें खाना नहीं मिले गा क्या ???? ऐसी क्या गलती हो गई भई हमसे.. इस पर माहिरा बोलती है ऐसी कोई बात नहीं है भैया आप 2 मिनट रुको मैं खाना लगती हूँ |

तभी नितिन वहां आ जाता है वीर सिंह नितिन को खाने के लिए बोलता है माहिरा की ओर देखते हुए बोलता है ये है हमारी जान हमारी बहन माहिरा, माही ये है नितिन हमारा नया दोस्त|

तीनों खाना खाने लग जाते है पर आज सुबह जो माहिरा और नितिन के बीच में हुआ था उसके बाद दोनों के बीच एक शर्म-सी थी। इस वजह से खाने की टेबल पर एक सन्नाटा पसरा हुआ था जो वीर सिंह की आवाज से टूट जाता है आज तुम उसस हवेली में जा रहे हो ना?? थोड़ा ध्यान रखना किसी चीज को छूना मत वरना किसी मुसीबत में पड़ जाओगे।

मेरी कुछ किताबें है हो सकता है तुम्हारे कुछ काम आ जाए। माहिरा तुम्हें दिखा देगी। मुझे कुछ काम से बाहर जाना हैं तुम आराम से खाना खाओ।

खाना खाने के बाद माहिरा नितिन को वीर सिंह के किताबों वाले कमरे में ले जाती हैं| नितिन किताब को पढ़ते हुए बोलता है तुम्हारे भाई को पढ़ने का शौक है इस पर माहिरा कुछ नहीं बोलती है और सामने से हवेली वाली किताब निकालकर टेबल पर रख देती है तभी बहार से कुछ आवाजें आती है ये आवाज सुनकर माहिरा और नितिन बहार आ जाते है नितिन माहिरा से पूछता

है ये सब क्या हो रहा है। इस पर माहिरा बोलती है मुझे नहीं पता मैं भी तो तुम्हारे साथ ही बाहर आई हूँ।

नितिन भीड़ के साथ आगे चला जाता हैं भीड़ में से किसी से पूछता है क्या हुआ भाई आप सब कहा जा रहे हो। अरे भाई हम सब चौक की तरफ जा रहे है चंदू को मोहिनी ने मार दिया है.. पर तुम कौन हो पहले कभी तो इस गाव में तुम्हें नहीं देखा। किनके यहाँ आए हो वो मैं वीर सिंह जी.... अच्छा तुम वीर भैया के घर आए हो। फिर तो तुम हमारे भी में मेहमान हुए। नितिन हाँ में हाँ मिलते हुए पूछता है

ये मोहिनी कौन है???? अरे मोहिनी चुड़ैल है मर्दों को मार देती है। ये चंदू भी गाव वालों को हवेली के पास मिला था। पिछली रात से नितिन के साथ जो कुछ भी हो रहा था| वो उसकी समझ से परे था। गाव वालों की बेतुकी बात सुनने के बाद तो उसकी हैरानी का कोई ठिकाना ही नहीं था। वो सबको बताना चाहता था की ये सब कुछ नहीं होता ये सिर्फ़ एक वहम है मगर वो जानता था गाव वाले उसकी बातों का यकीन नहीं करेंगे इसलिए नितिन चुप रहता है और जो कुछ हो रहा था उसे चुप-चाप देखता है

परंतु नितिन ने मन ही मन में हवेली में जाने का फैसला कर लिया था| चाहे जो हो जाए वो अपने मन में उठ रहे सवालों के जवाब ढूंढ के रहेगा। नितिन अपने में खोया हुआ था तभी उसके कंधे पर एक हाथ आता है जैसे ही पीछे मुड़ता तो वहां वीर सिंह होता है क्या हुआ तुम यहाँ क्या कर रहे हो........ **"वो मैं"**......... चलो घर चलो अच्छा तुमने किताबें देखी? क्या तुम्हारे काम की थी?

हाँ मैंने देखी है परंतु मैं हवेली वाली किताब को नहीं पढ़ पाया था। क्या आप मुझे उस हवेली के बारे में कुछ बता सकते हो ये मोहिनी कौन है? और गाव वाले उसे इतना क्यू डरते है?

"हाँ हाँ हाँ क्यू नहीं" ऐसा माना जाता है। ये हवेली शापित है कुछ दशकों पहले इस हवेली में मोहिनी नाम की औरत रहती थी। मोहिनी बेहद खूबसूरत थी उसका गोरा बदन झील जैसी गहरी आँखे कोई भी उसे देख ले तो पल भर के लिए सब कुछ भूल जाए.. परंतु वह एक गरीब परिवार से आती है इसलिए उससे अपने दैनिक जीवन में भी अकसर लोगों से ताने सुनने पड़ते थे लोग कभी उसकी किस्मत को कोसते तो कभी उसके परिवार को ताने मारते थे|

एक दिन कुछ पैसों के लिए उसके पिता ने ही उसे नगरस्त्री बना दिया। एक दो बार मोहिनी के भागने की कोशिश भी की परंतु वो पकड़ी गई। कुछ समय के बाद उसने अपनी किस्मत से समझोता कर लिया था। एक शाम उस हवेली के पास बने मंदिर में दूसरे गाव का एक जवान लड़का आया वो जैसे पीछे मुड़ा अपने सामने मोहिनी को पाता है कुछ पल के लिए वो उसकी खूबसूरती में खो गया था। कुछ दिनों बाद फिर से वो लड़का मोहिनी से मिलता है दोनों की बात होती है। दोनों एक दूसरे को पसंद करने लगते है.. कुछ समय तक ये सिलसिला यूंही चलता रहा........ मोहिनी उसको यह समझने की कोशिश करती है हम कभी साथ नहीं हो सकते मुझे आम लोगों की तरह रहने का कोई हक नहीं है मैं एक नगरस्त्री हूँ मेरे साथ रह के तुम और तुम्हारा परिवार भी बदनाम हो जाएगा|

तुम चले जाओ यहाँ से इस पर हर्षवर्धन बोलता है इसमें तुम्हारा क्या दोष है तुम्हें जबरदस्ती नगरस्त्री बनाया गया है और मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता गांव वाले, आस पास के लोग क्या सोचते है कुछ दिनों बाद गाव वालों को दोनों के बारे में पता चल जाता है। गाव वालों ने एक साथ मिलकर गाव की बाकी सभी नगरस्त्रियों को सबक सीखने के लिए दोनों को जिंदा जला दिया तब से मोहिनी इस हवेली में रहती है।

जो लोग रात में उस हवेली में जाते है उन्हें मार देती है। तुम तो शहर से आए हो जानता हु इन सब बातों में यकीन नहीं करते फिर भी थोड़ा संभल कर रहना।

वीर सिंह और गाव वालों की सारी बातें बेतुकी लग रही थी नितिन इन सब बातों का जवाब देना चाहता था। परंतु यदि नितिन कुछ बोलता तो हो सकता है गांव वाले उसको गांव से बाहर निकाल दे और नितिन कभी भी अपने मन में उठे सवालों का जवाब नहीं ले पाएगा। क्या उसके साथ जो कुछ भी हो रहा था वो सच में होता है या फिर वो उसका और गांव वालों का वहम है|

CHAPTER 5:
बाबा का राज

अगले दिन सुबह-सुबह नितिन बिना नाश्ता किया ही हवेली की ओर चल पड़ा थोड़ी देर बाद नितिन हवेली के सामने पहुंच गया | वो बिना देरी किए हवेली के अंदर चला गया वो हवेली तक पहले भी आ चुका था इसलिए अब उसे वह हवेली अब इतनी डरावनी नहीं लग रही थी|

नितिन बस कुछ ना कुछ करके अपने मन में उठे सभी सवालों के जवाब जानना चाहता था इसलिए वह तेजी से आगे बढ़ गया जैसे ही थोड़ा आगे जाता है उसके सामने कमरा था वह देखने में तो कोई तहखाना जैसा दिख रहा था|

वह जैसे ही नितिन तहखाना को खोलने की कोशिश करता है हवेली बहुत पुरानी थी और वहां कोई आता-जाता भी नहीं था इसी वजह से नितिन को तहखाना खोलने में बहुत परेशानी हो रही थी किसी तरह वह तहखाना को खोलने की कोशिश कर रहा था जैसे ही उसे लगा कि तहखाना खुल गया है|

तभी अचानक से मौसम का रंग फिर से बदल गया तेज हवा चलने लग गई सूखे पेड़ों के पत्ते इधर-उधर उड़ने लग गए तेज हवा के कारण नितिन को कुछ ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था नितिन जैसे ही आगे कदम बढ़ाता है तो वह लड़खड़ा कर नीचे गिर जाता है वह दोबारा उठता है और फिर से तहखाना के अंदर जाने की कोशिश करता है परंतु हवा इतनी तेज थी की नितिन फिर से लड़खड़ा कर गिरने वाला होता है तभी किसी ने उसका हाथ थाम लिया मौसम भी पल-भर में पहले के जैसे शांत हो गया था। नितिन अपने आसपास देखता

हैं तो उसे कोई नहीं पता है नितिन हवेली में घूम कर देखता है तभी उसे हवेली के कोने में पेड़ के पास कोई खड़ा था|

नितिन को मालूम था उस हवेली में कोई आता-जाता नहीं है इसलिए नितिन के अलावा हवेली में किसी और का होना नितिन को असमंजस में डाल रहा था|

जैसे ही नितिन अपने से कुछ दूर खड़े आदमी से बात करने के लिए आगे बढ़ता है वो आदमी वहीं पेड़ के पास बैठ जाता है उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वो नितिन से बात करना चाहता हो|

नितिन उस आदमी के पास जाकर खड़ा हो जाता है

वो आदमी देखने में काफी बुजुर्ग था उसके लंबी सफेद दाढ़ी और उसके लंबे सफेद बाल उनकी आंखों में एक अलग से चमक थी एक पल उन्हें देखा.. और अगले ही पल नितिन ने एक साथ में अपने मन में उठ रहे सभी सवाल एक सास में पूछ लिया|

"आप कौन हैं???? और इस हवेली में कैसे आपको डर नहीं लगा ?? अब कुछ बोल क्यों नहीं रहे इस हवेली में तो कोई आता-जाता नहीं है फिर आप यहां कैसे??"

बाबा बस नितिन को एक टक देखे जा रहा था कुछ देर बाद वो बाबा ने एक गंभीर आवाज में बोला **"तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था तुम्हारे यहां आने से गांव वालों की मुसीबत और बढ़ जाएगी वो किसी को नहीं छोड़ेगी|**

तुमने यहां आकर अपनी मौत को न्योता दे दिया है | सबकी भलाई इसी में है तुम इस गांव से वापस चले जाओ'' जो अतीत में दबा हुआ है उसे

फिर से मत निकालो वरना सिर्फ तबाही होगी कोई भी उसे नहीं रोक पाएगा इतना बोलकर वह बाबा अचानक से गायब हो गया |

अभी नितिन के साथ जो कुछ भी हुआ था उससे नितिन की होश उड़ गए थे कोई इंसान अचानक कैसे गायब कैसे हो सकता है??? अभी जिस इंसान से वह मिला वह सच में उसके सामने था? या सिर्फ़ वहम ???

ऐसे ना जाने कितने सारे सवाल नितिन के मन में उठ रहे थे|

उसे समझ नहीं आ रहा था वह क्या करें क्या ना करें हवेली में रहे? अपने मन में उठ रही उलझन को सुलझाए या वापस चला जाए अपने में खोया हुआ नितिन आगे बढ़ जाता है.. लेकिन हवेली में काफी बार घूमता है कोई नहीं दिखता है आखिर में परेशान होकर नितिन हवेली से बाहर आ जाता है अब दिन भी ढल चुका था और हल्की-हल्की ठंड भी बढ़ने लगी थी। नितिन घर पहुंच जाता है वह जैसे ही अंदर आता है माहिरा उस पर गुस्से से बरस पड़ती है|

पूरे दिन कहां थे? इस गांव नए हो कहीं खो हो जाते तो और खाना नहीं खाना होता बिना खाना खा निकल गए ऐसे क्या देख रहे हो|

उसके गुस्से में नितिन के लिए फिक्र साफ दिख रही थी नितिन कुछ समझ नहीं पता तभी वहाँ वीर सिंह आ जाता है अरे!!! यह क्या तुम दोनों फिर लड़ने लग गए माहिरा थोड़ा तो कम लड़ा करो क्या हुआ????

माहिरा बात बदलते हुए बोलती है वो..ओ भैया हाथ धो लीजिए खाना बन गया है खाना खा लीजिए थोड़ी देर में सब खाना खाने के लिए बैठ जाते हैं परंतु नितिन के मन में बहुत सारी बातें चल रही थी। इसलिए वह अचानक खाना छोड़कर अपने कमरे में चला जाता है नितिन का ये बर्ताव माहिरा और वीर सिंह को असमंजस में डाल रहा था

वहीं दूसरी और नितिन अपने बेड पर सोने की कोशिश कर रहा था। परंतु नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी आखिर में परेशान होकर नितिन कमरे के बगल में बने किताबें वाले कमरे में चला गया.. और हवेली नाम की किताब के जरिए अपने मन में उठे सवालों के जवाब ढूंढने की कोशिश करता है काफी मशक्कत करने के बाद भी उसे उसके सवालों के जवाब नहीं मिलते तो नितिन झुंझलाहट में बाहर छत पर आ जाता है

ठंड काफी बढ़ चुकी थी नितिन अपने सवालों में इतना उलझा हुआ था उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था वो किससे बात करें उसके सवालों के जवाब कौन दे सकता है तभी नितिन की नजर घर से कुछ दूरी पर खड़े व्यक्ति पर पड़ी…

गहरा कोहरा होने के कारण वो व्यक्ति साफ दिखाई नहीं दे रहा था जैसे ही नितिन थोड़ा आगे जाता है तो उसे वो व्यक्ति साफ दिखने लग जाता है घर से कुछ दूरी पर एक बुजुर्ग आदमी खड़ा था उसकी बड़ी सफेद दाढ़ी और बदन पर एक लंबी चादर ओढ़े था वह आदमी नितिन को एक टक घूरकर देख रहा था

अचानक नितिन को याद आता है ये बाबा तो वही है जो उसे आज हवेली में मिला था उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था वो बिना किसी देरी के नीचे आ गया और घर से निकलकर बाबा की ओर दौड़ने लगा परंतु अचानक नितिन की आंखों के सामने बाबा फिर से कोहरे में गायब हो जाता है|

CHAPTER 6:
किताब का रंग बदलना

अगली सुबह जब नितिन की आंख खुलती है तो वह अपने सामने माहिरा को पता है **अरे बाप रे!!! क्या तुम्हारा मुझे मारने का इरादा है ऐसा सुबह-सुबह डराने आ गई हो.....** हुउउहह

हां तुम तो चाहती यही हो कि मैं मर जाऊं.... मुझे कोई शौक नहीं है तुम्हें डराने का मैं तो तुम्हें देखना तक नहीं चाहती। **आए बड़े भैया बुला रहे हैं.......** मैं तो सिर्फ तुम्हें बुलाने आई थी। और अगली बार से मेंरी चीजों को हाथ मत लगाना समझे माहिरा की ये हरकत देखकर नितिन हंसने लग गया था...एक पल को बीती रात उसके साथ जो कुछ हुआ था वो सब कुछ भूल गया था|

वीरानगढ़ में आने के बाद नितिन ठीक से हंस तक नहीं था माहिरा की है बच्चों जैसी हरकतें बहुत प्यारी लग रही थी कुछ देर अपने बेड पर बैठकर नितिन उसकी बातों को याद कर रहा था। थोड़ी देर बाद जब नितिन नीचे आता है

तो वीर सिंह सामने खान की टेबल पर बैठा बड़ी हैरानी से हवेली वाली किताब को देख रहा था। नितिन कुछ बोलता उससे पहले ही वीर सिंह नितिन को हवेली वाली किताब दिखाते हुए बोलता है **"तुमने यह देखा इस किताब के कुछ पन्ने लाल हो गए हैं"**

'हां ये कैसे हुआ'' मैंने जब कल रात ये किताब देखी थी तब तो इसके सारे पन्ने एक जैसे थे!!! क्या हो रहा है मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा एक रात में पन्नो का रंग कैसे बदल सकता है ये उलझन नितिन के चेहरे पर साफ देखी जा सकती थी|

वीर सिंह नितिन को शांत करते हुए बोलता है तुम थोड़ा शांत हो जाओ मैं जानता हूं तुम्हारे लिए इन सब पर यकीन करना बहुत मुश्किल है इसलिए मैंने तुमसे कहा था। **इस गांव में जो जैसा दिखता है वो वैसा नहीं है** किसी भी चीज को छूने से पहले सोचना वरना किसी मुसीबत में पड़ जाओगे।

हां मैं जानता हूं आपने मुझे ये कहा था पर मैंने ऐसे किसी चीज को हाथ नहीं लगाया| **ये पन्नो का रंग कैसे बदला……**वीरसिंह गंभीर आवाज में बोलता है हां ऐसा हो सकता है किताब के पन्नों का रंग बदल सकता है……….परंतु सभी किताबों का नहीं.. सिर्फ हवेली वाली किताब का क्योंकि ये एक जादुई किताब है।

मेरे दादाजी ने मुझे यह किताब देते हुए कहा था…..….माहिरा पीछे से वीर सिंह की बात को काटते हुए बोलती है.. **जब अतीत वर्तमान में आ जाएगा|** है ना भैया वीर सिंह माहिरा की बात का हाँ में जवाब देते हुए बोलता है **हां माहिरा तुम सही बोल रही हो…..**वीर सिंह टेबल पर बैठते हुए बोलता है **जब मोहिनी को वो सब मिल जाएगा जिसकी तलाश में वह इतने सालों से भटक रही है तो इस किताब के पन्नों का रंग बदल जाएगा| मतलब जिस दिन मोहिनी के सारे इच्छाएं पूरी हो जाएगी|**

फिर से अतीत वर्तमान में आएगा तब इस किताब के सारे पन्नों का रंग बदल जाएगा और कुछ पन्नों पर चित्र उभर आएंगे.. वहीं नितिन ये सब सुन रहा था| परंतु ये सब कुछ उसकी समझ से बहुत परे था|

नितिन सब्जी डालते हुए बोलता है मतलब…….. **अतीत वर्तमान में आ जाएगा ये कैसे हो सकता है जो बीत गया है वो वर्तमान में कैसे आएगा** अब यह मत कहना कि…… **यहां ऐसा भी हो सकता है** इतना तो मुझे भी पता है…

जो चला गया वो कभी वापस नहीं आता बचपन से सुनते आए हैं गलत कैसे हो सकता है। ये उलझन नितिन के चेहरे पर साफ देखी जा सकती थी| वीर सिंह नितिन की ओर पानी का गिलास करते हुए बोलता है……. तुम थोड़ा शांत हो जाओ पहले आराम से पानी पियो उसके बाद तुम्हें सब

समझता हूं……..माहिरा नितिन को छेड़ते हुए बोलती है **"अरे भैया इसे कहां समझ समझ आएगा ये शहर के लोग हैं इनमें बुद्धि तनिक कम होती है आप क्यों मेंहनत कर रहे हो रहने दो इसे कुछ समझ में नहीं आएगा|''**

अचानक से मौसम का मिजाज बदल जाता है तेज हवा चलने लगती है नितिन को अपने से कुछ दूरी पर वो बाबा दिखाई देता है जो उसे हवेली में मिला था उसके बाद घर के बहार अब उसे घर के अंदर दिख रहा था| वो बाबा नितिन को घूर-घूर कर देख रहा था और बोलता है **'अपनी जान प्यारी है तो चले जाओ यहां से वरना"**

यहा सब कुछ बर्बाद हो जाएगा और सारी मौतों के जिम्मेंदार तुम होंगे चले जाओ यहां से नितिन को कुछ समझ आता उससे पहले ही वो बाबा फिर से धुएं में विलीन हो जाता है

वीर सिंह नितिन को झटकाते हुए बोलता है क्या हुआ???? कहां खो गए हो और उधर क्या देख रहे हो कौन है? तुम इतना डरे हुए क्यों हो? नितिन हड़बड़ाते हुए बोलता है वो बाबा कौन बाबा क्या हुआ? कहां कौन बाबा क्या बोल रहे हो? तुम थोड़ा ठीक से बोलो कुछ समझ नहीं आ रहा है नितिन इतना घबरा गया था की इस ठंड के मौसम में भी उससे डर के मारे उसके पसीने छूट रहे थे|

नितिन कुछ आगे बोलता उससे पहले ही नितिन बेहोश हो जाता है कुछ देर बाद जब उसकी आंखें खुलती हैं तो माहिरा को अपने सामने पाता है नितिन

उठने की कोशिश करता है माहिरा उसे रोकते हुए बोलती है.... चुपचाप यहां लेटे रहो कुछ करने की जरुरत नहीं है ये लो दवाई खाओ डॉक्टर ने तुम्हें आराम करने के लिए बोला है पता नहीं पूरे दिन क्या करते हो क्या सोचते रहते हो कहां गायब रहते हो ये तो होगा ही... मुझे क्या

माहिरा एक सांस में नितिन पर बरस गई थी| इस डांट में माहिरा की फ़िक्र साफ़ दिख रही थी शायद कहीं न कहीं माहिरा नितिन को पसंद करने ***लगी*** थी|...... वही दूसरी ओर वीर सिंह हड़बड़ी में घर से निकल गया और हवेली के सामने जाकर

मोहिनी का नाम पुकारने लगा|.... कुछ पल में वीर सिंह से कुछ दूरी पर एक बेहद खूबसूरत औरत खड़ी थी......वो औरत कोई और नहीं बल्कि मोहिनी थी| अपने सामने मोहिनी को देखकर वीर सिंह के हाथ पैर कांप रहे थे| एक लम्बी सांस भरते हुए वीर सिंह ने बोला तुम जैसा चाहती थी

मैंने वैसा कर दिया अब प्लीज मेंरी बहन को कुछ मत करना प्लीज...... तुम चाहती हो तो मै हवेली में भी छोड़ जाऊंगा|

अब दिन भी ढल चुका था|...वीर सिंह भी घर की ओर चल पड़ता है वीर सिंह के चेहरे पर शांत भाव था| जैसे वह अभी-अभी किसी बड़ी मुसीबत से बाहर निकाला हो कुछ देर में वह टहलता-टहलता घर पहुंच गया जैसे ही वीर सिंह घर के अंदर आता है अपने सामने माहिरा को पता है माहिरा कुछ बोलती कुछ उससे पहले ही वीर सिंह हड़बड़ाता हुआ बोलता है आज तो राम सिंह के साथ पूरा दिन लग गया मुझे बहुत भूख लगी है और नितिन ने कुछ खाया या नहीं अब उसकी तबीयत कैसी है बोलकर अपने कमरे की ओर चला गया|

माहिरा को कुछ समझ नहीं आया और वो मन ही मन बड़-बड़ाते हुए रसोई से खाना लाकर टेबल पर लगने लगती है वही नितिन भी अपने कमरे से नीचे आ

जाता है और सोफे पर बैठकर हवेली वाली किताब को देखने लगता है अब हवेली वाली किताब में कुछ आकृतियां उभर आई थी आकृति के माध्यम से वह अपने मन में उठे सभी सवालों के जवाब खोजना चाहता था|

परंतु आकृतियां इतनी अजीब थी| कोई भी व्यक्ति उन आकृतियों को देखकर कुछ समझ नहीं सकता था ऐसा लगता था|........ मानों जैसे वो किसी एक अलग ही दुनिया की हो|

नितिन यह सब समझने की कोशिश कर ही रहा होता है... तभी उसके कानों में आवाज पड़ती है जैसे कोई फुसफुस रहा हो पहले तो नितिन आवाजों पर ध्यान नहीं देता है परंतु कुछ ही पल में आवाज बढ़ गई थी|

अब ये आवाज नितिन को बहुत परेशान कर रही थी| उसे समझ नहीं आ रहा था| यह उसके साथ क्या हो रहा है आखिर में परेशान होकर नितिन ने हवेली वाली किताब को टेबल पर पटकते हुए अपने कमरे की ओर जाने लगता है|

तभी माहिरा नितिन को पीछे से आवाज लगती है क्या खाना नहीं खाना क्या चुपचाप बैठ कर खाना खा लो समझे बाद में जो करना है वो करना...तभी वीर सिंह वहां आ जाता है

और माहिरा को रोकते हुए बोलता है माहिरा तुम ये कैसे बात कर रही हो तुम्हें पता है ना नितिन हमारा मेंहमान है तुम उसे इस तरीके से बात नहीं कर सकती तुम्हें माफी मांगनी चाहिए| माहिरा गुस्से में नितिन को देखते हुए टेबल पर जाकर बैठ जाती है वीरसिंह माहिरा की हरकत को छुपाते हुए बोलता है| **"अरे तुम बुरा मत मानना वो हमारी बहन थोड़ी सी शैतान है और थोड़ी से जिद्दी भी"**......चलो खाना खाते हैं इतना बोलकर वीर सिंह और नितिन भी खाने के टेबल पर बैठ जाते हैं | थोड़ी देर बाद तीनों खाना खाकर अपने-अपने कमरे में चले जाते हैं

नितिन अपने कमरे में बेड पर लेटा बस करवट बदल रहा था| थोड़ी देर पहले नीचे जो कुछ उसके साथ हुआ उसके दिमाग में सिर्फ वही चल रहा था आखिर ये आवाज मुझे क्यों सुनाई दे रही है यह क्या हो रहा है यही सोचते सोचते न जाने नितिन की आंख कब लग गई थोड़ी देर बाद माहिरा कुछ किताबें लेकर नितिन के कमरे में आती हैं परंतु नितिन गहरी नींद में सो चुका था|

कुछ देर माहिरा वहीं खड़ी होकर नितिन को देख कर कुछ सोच रही थी अचानक से वीर सिंह की आवाज सुनाई पड़ती है माहिरा कमरे की लाइट ऑफ कर कर नीचे जाते हुए सोच रही थी आखिर यह लड़का कितना अजीब है... कभी तो इतना बोलता है और कभी कुछ बोलता ही नहीं है कभी उल्टा जवाब देता है तो कभी मुंह बनाता है पता नहीं इसका क्या चक्कर है माहिरा के चेहरे पर उलझन साफ दिख रही थी|

CHAPTER 7:
अतीत का सामना

अगली सुबह जब नितिन उठकर सीधा कमरे के बगल में बने बाथरूम में चला गया| परंतु इस बार अंदर जाने से पहले नितिन दरवाजा खटखटाकर पता कर लेता है कोई अंदर है या नहीं पिछली बार जो नितिन और माहिरा के बीच में हुआ था| वो दोबारा ऐसी किसी सिचुएशन में फंसना नहीं चाहता था|

नितिन मन ही मन में बडबडाते हुए बोलता है अरे!!!! यार कहां फंस गया ये गांव और इस गांव के लोग दोनों ही बहुत अजीब है इनकी हर बात उल्टी होती है **बताओ ऐसा होता है क्या??? किसी किताब का रंग कैसे बदल सकता है???? और बोलते हैं मोहिनी ने किया है............... हुँह पागल लोग.......**

पता नहीं मैं वापस कब जा पाऊंगा इतने अजीब और गरीब लोग हैं अगर मैं यहां थोड़े दिन और रहा तो पागल हो जाऊंगा तभी माहिरा नितिन के पीछे आकर खड़ी हो जाती है वो नितिन की सारी बातें सुन रही थी| मगर कुछ बोलती नहीं हैं नितिन जैसे ही पीछे मुड़ता है तो उसके होश उड़ जाते हैं

माहिरा नितिन को छेड़ते हुए बोलती है क्या हुआ? चुप क्यों हो गए हो बोलो बोलो और बोलो जहां तुम रहते हो उन्हीं की बुराई कर रहे हो कैसे अजीब इंसान हो और क्या बोले तुम.......... तुम पागल हो जाओगे तुम तो पहले से ही पागल हो कितनी अजीब और गरीब हरकतें करते हो| कभी कुछ बोलते हो तो कभी कुछ... कोई और देखेगा तो तुम्हें पागल ही समझेगा|

माहिरा की बातों से नितिन काफी चिढ़ चुका था ये झुंझलाहट उसके चेहरे पर साफ देखी जा सकती थी| नितिन कुछ बोले उससे पहले उसका फोन बज गया और नितिन ने बिना किसी देरी के उसने फोन उठा लिया फोन उसके किसी दोस्त का था|

माहिरा अभी भी वही खड़ी थी नितिन माहिरा को पीछे मुड़कर देखता है तभी फोन के दूसरी तरफ से आवाज आती है

और भाई क्या हाल-चाल तू तो वहां जाकर भूल गया है क्या बात है गांव इतना पसंद आ गया है या वहां कोई गांव वाली पसंद आ गई है ……अरे??????

सनी भाई क्या बताऊं यहां आकर तो मैं फंस गया यहां के लोग बहुत अजीब है क्या बोलते हैं कुछ समझ नहीं आता………… हां हां अब तू ऐसे ही तो बोलेगा तू मुझे क्यों ही बताएगा अगर तुझे कोई गांव वाली पसंद आई भी है

तो इस पर नितिन बोलता है नहीं यार ऐसा कुछ नहीं है मुझे कोई इतनी जल्दी पसंद नहीं आ सकता…. तुम तो जानते ही हो मुझे जो पसंद आएगी वो तो स्पेशल ही होगी तभी सनी अचानक से बोलता है चल नितिन मैं बाद में कॉल करता हूं एक काम आ गया है

और तुझे तो पता ही है अपना मैनेजर का कितना अजीब आदमी है बिल्कुल तेरे गांव वालों के जैसे हां ठीक है इतना बोलकर नितिन कमरे में जाने लगता है|

नितिन को ऐसा लगता है जैसे कोई उसके पीछे खड़ा ***होकर*** और उसकी बातें सुन रहा हो नितिन जैसे ही पीछे मुड़कर देखा है वहां पर कोई नहीं होता उसे लगा शायद ये उसका वहम है और वो नीचे चला जाता है वीर सिंह हाल में बैठा कुछ काम कर रहा था|

काम में लगे-लगे नितिन से उसकी तबीयत के बारे में पूछता है अब तबीयत कैसी है ठीक है ना?????

हां ठीक है पता नहीं कल मैं बेहोश कैसे हो गया| वीर सिंह उठाते हुए बोलता है| भाई काम......वगैरह होता रहेगा| तुम समय पर खाना खाया करो काम के चक्कर में अपनी तबीयत खराब मत करो |

इतना बोलकर वीर सिंह घर से बाहर चला गया| नितिन भी वीर सिंह के पीछे-पीछे घर से बाहर निकल गया| तभी पीछे से माहिरा की आवाज सुनाई देती है| और नितिन वहीं रुक गया माहिरा थोड़े गुस्से में नितिन पर चिलाते हुए बोली कहां चल दिए खाना नहीं खाना|

अभी तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं हुई है इतनी लापरवाही अच्छी नहीं है कुछ खाओगे नहीं तो दवाई कैसे लोगे और दवाई नहीं लोगे तो ठीक कैसे होंगे अब तुम क्या चाहते हो तुम खाना खाओ उसके लिए मैं तुमसे माफी मांगू........

आसपास के लोग माहिरा और नितिन को देखकर मुस्कुरा रहे थे तभी वहां एक आदमी नितिन के कंधे पर हाथ रखते हुए बोलता है| अरे बेटा अपनी बीवी की बात मानने में ही समझदारी है मैं अपने अनुभव से बता रहा हूं अगर उसकी बात मान लोगे तो फायदे में रहोगे बाकी तुम्हारी मर्जी||

नितिन बिना कुछ बोले घर के अंदर चला गया और चुपचाप टेबल पर जाकर बैठ गया तभी माहिरा वहां आ जाती हैं और नितिन को खाना परोसने लगती है दोनों एक दूसरे को देख रहे थे| माहिरा मन ही मन में सोच रही थी |

"मुझे बहुत अच्छे से डांटेगा पता है अब इसको मौका जो मिल गया है क्या जरूरत थी पीछे से टोकने की......... पड़ गई ना मुसीबत में जा रहा था| तो जाने देती हे भगवान बस इस बार बचा ले"

परंतु नितिन ने कुछ नहीं बोला और चुपचाप खाना खाकर घर से निकल गया माहिरा को नितिन का यह बर्ताव थोड़ा सा पेचीदा लग रहा था परंतु वह कुछ नहीं बोलती |

थोड़ी देर बाद नितिन हवेली में पहुंच गया | वो बिना कुछ सोच अंदर चला गया वो घूम कर हवेली को देख रहा था हवेली की दीवारें काफी पुरानी हो चुकी थी। उन पुरानी दीवारों में वो अपने मन में उठे सवालों के जवाब खोजने की कोशिश कर रहा था हवेली के अंदर एक छोटा सा दरवाजा बना हुआ था|

दरवाजा देख कर ऐसा लगता था | जैसे पुराने समय में इस दरवाजे से हवेली के लोग आते जाते होंगे काफी मशक्कत करने के बाद दरवाजे को खोलकर अंदर चला गया सामने काफी अंधेरा था अंधेरे में कुछ हल्का सा चमक रहा था|

नितिन जैसे ही उसे चमक की ओर बढ़ता है दरवाजा अचानक से बंद हो जाता है उसे कमरे में जो हल्की-फुल्की रोशनी थी |

वो भी बंद हो गई थी नितिन को बस एक हल्की सी कोई आकृति दिख रही थी पता लगाना मुश्किल था क्या है नितिन जैसे ही उसे आकृति को छूता है अचानक से बेहोश हो जाता है कुछ देर बाद जब नितिन को होश आता है तो वह खुद को एक मंदिर में पता है नितिन उठकर अपने आसपास देख रहा था|

वो ये समझने की कोशिश कर रहा था| कि जब वो बेहोश हुआ तब वो हवेली में था और अचानक मंदिर में कैसे आया और ये कौन-सा मंदिर है|

यह सोचते हुए नितिन मंदिर से बाहर निकल गया आसपास देखते हुए आगे की ओर चल रहा था कुछ देर बाद उसको एहसास होता है कि उसके आसपास जो समान है घर बने हुए हैं वह आज के समय से अलग है साथ ही लोगों का पहनावा भी थोड़ा पुराने तरीके का है नितिन यह सब सोते हुए आगे बढ़ गया

तभी उसके कानों में एक लड़की के रोने की आवाज सुनाई देती नितिन आसपास देखा है तो उसे कोई दिखाई नहीं देता है वह ध्यान से रोने की आवाज को सुनने की कोशिश करता है उसे एहसास होता है रोने की आवाज उसके पीछे से आ रही है नितिन घबराते हुए आगे बढ़ता है|

ये घबराहट उसके चेहरे पर साफ़ देखी जा सकती थी| नितिन थोड़ा आगे बढ़ता है तो पता है कोई लड़की कोने में बैठी रो रही थी उसे लड़की ने लाल रंग के कपड़े पहने हुए थे। और सर झुका कर रो रही थी| उसके बिखरे बालों के कारण उसका चेहरा साफ नहीं दिख रहा था|

नितिन हकलाते हुए पूछता है **त-त-त तुम कौन हो और ऐसे क्यों रो रही हो** नितिन थोड़ी हिम्मत जुटा कर फिर से पूछने की कोशिश करता है देखो तुम हो कौन ????

अचानक से उसे लड़की का रोना बंद हो गया और उठकर नितिन के पास आ जाती है नितिन उसका चेहरा देखकर चौक जाता है उसकी हैरानी का कोई ठिकाना ही नहीं था|

लेकिन एक सहमी आवाज में बोलता है **तुम त-त-त-तुम तो वो लड़की हो जो मुझे हवेली के बाहर मिली थी ऐ-ऐ-ऐ एक मिनट नहीं नहीं तुम तो वह फोटो वाली लड़की हो..........**

हां तुम वह फोटो वाली लड़की हो जिस गांव वाले मोहिनी बोलते हैं और गांव वाले का ये भी कहना है कि तुम भूतनी हो तुमने ही चंदू को मारा है तुम लोगों को मार देती हो?

आखिर तुम हो कौन नितिन ने एक सास में उस लड़की से इतने सारे सवाल पूछ लिए थे|

इसके जवाब में उसने कुछ नहीं बोला और आगे की तरफ चलने लगी नितिन भी अपने जवाब की तलाश में उसे लड़की के पीछे-पीछे चलने लगता है नितिन उसके पीछे-पीछे चलते जंगल के रास्ते से एक अंधेरी जगह पर पहुंच गया था|

घना अंधेरा होने के कारण नितिन उस लड़की को देखा तो नहीं पता है बस उसे पायल की आवाज सुनाई देती है वह उसी को फॉलो कर रहा था। कुछ देर बाद पायल की आवाज भी आनी बंद हो जाती है|

पायल की आवाज जैसे ही बंद होती है नितिन एकदम से होश में आ जाता है और अपने आसपास देखा है मगर अंधेरा होने के कारण उसे कुछ नहीं दिख रहा था| नितिन अपने आसपास उजाला करने के लिए ढूंढता है|

CHAPTER 8:
अतीत मे मोहिनी

नितिन उस डिब्बेनुमा, घुटन भरी जगह से बाहर निकलने की भरपूर कोशिश कर रहा था, लेकिन उसे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। चारों ओर इतना काला अँधेरा था। कि वह अपने हाथ भी मुश्किल से देख पा रहा था। दीवारों की नमी, भीतर की बदबू और भारीपन उसके मन की बेचैनी को और बढ़ा रहे थे।

कुछ देर बाद वह थककर एक कोने में बैठ गया। उसका दिल डर और घबराहट में तेज़ धड़क रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस बंद कमरे से कैसे बाहर निकले।

उसे ऐसा लगने लगा था जैसे अगर वह यहाँ कुछ देर और रहा… तो यहीँ दम तोड़ देगा। कमरे की हवा सीलन से भरी थी, सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था।

तभी उसे लगा कि जैसे कमरे के किसी कोने से कोई उसकी ओर बढ़ रहा है। पहले हल्की सरसराहट… फिर पैरों की धीमी चाल… और अचानक—एक तेज़, खौफनाक हँसी कमरे में गूँज उठी।

नितिन भय से काँपकर झट से खड़ा हो गया।

“कौन है…?? कौन है वहाँ…??”

पर जवाब में फिर वही डरावनी हँसी सुनाई दी।

वह घबराकर बाहर निकलने का रास्ता टटोलने लगा, अँधेरे में अपने हाथ फैलाए चारों तरफ़ दीवारें छू रहा था। इसी हड़बड़ाहट में वह लड़खड़ाकर एक दीवार से टकरा गया।

पर इस बार कुछ अलग हुआ—दीवार धीरे से खिसक गई…एक हल्की, मंद रोशनी अंदर आने लगी।

नितिन ने झट से उसे और धकेला और किसी तरह उस संकरे कमरे से बाहर निकल आया। सामने फैला था—एक स्वप्न जैसा बगीचा

बाहर की दुनिया बिल्कुल अलग थी। चारों ओर फैला था—एक विशाल, खूबसूरत बगीचा। हर तरफ खिले हुए फूल… ऊँचे-ऊँचे पेड़…हल्की हवा में झूमते पौधे…जैसे कोई जादुई स्थान हो। थोड़ा आगे एक बड़ा तालाब था। पानी बिल्कुल साफ़…उस पर तैरते गुलाबी और सफेद कमल…उनके बीच शांति से चलते हंस…सब कुछ किसी स्वर्ग जैसी अनुभूति दे रहा था।

तालाब के दूसरी ओर पत्थर की सीढ़ियाँ बनी थीं, जिनके सामने सफेद चिकने पत्थर सजे हुए थे। नितिन यह दृश्य देखकर पूरी तरह अवाक था।

उसके मुँह से अनायास ही निकला—

“ये कहाँ आ गया मैं…? कहीं सच में मर तो नहीं गया…?”

उसे सब कुछ स्वप्न जैसा लग रहा था। वह आगे बढ़ ही रहा था कि तभी—धीमी-धीमी पायल की आवाज़ हवा में तैरती हुई उसके कानों तक पहुँची। नितिन ने रुककर ध्यान से सुना… आवाज़ पास आ रही थी…धीरे-धीरे और साफ़…उसने घबराकर पीछे मुड़कर देखा—

सफेद कपड़ों में लिपटी एक लड़की उसकी ओर आ रही थी।

उसकी चाल धीमी, कोमल और पायल की हर छनक बगीचे में गूँज रही थी।

नितिन हड़बड़ाहट में झाड़ियों के पीछे छुप गया। लड़की उसके पास से गुज़रकर तालाब के किनारे पहुँची और फिर पानी में उतरने लगी।

नितिन ने पत्तों के बीच से झाककर देखा—

उसका चेहरा पत्तों के पीछे छिपा था, पर बाकी शरीर साफ़ दिख रहा था। उसके लंबे, काले, घने बाल कमर तक झूल रहे थे। हाथ-पैरों पर गहरी मेंहदी सजी थी। उसकी साड़ी भीगेने से उसके शरीर के उभारों को और उभार दे रही थी।

उसमें एक अजीब-सी मोहमयी सुंदरता थी, जैसे कोई इंसान की नहीं बल्कि किसी दूसरी दुनिया की हो। उसकी चाल में एक सम्मोहन था, जैसे हर कदम किसी अदृश्य शक्ति की लय पर चलता हो।

उसके आसपास का वातावरण अचानक शांत हो गया, मानो पूरा बगीचा उसकी हर हरकत को निहार रहा हो। उसकी मौजूदगी हवा को भी महका रही थी—एक ऐसी महक, जो सामान्य नहीं थी, बल्कि किसी पुरानी कथा, किसी रहस्य, किसी मोहिनी जैसी शक्ति का अहसास दिला रही थी।

नितिन के मन में अनजानी हलचल होने लगी। वह उसे बस देखता ही रह गया…लड़की पानी में आगे बढ़ी और अपने शरीर से बचे हुए कपड़े भी धीरे से उतार दिए। नितिन ने झट से अपनी आँखें बंद कर लीं, दिल जोर-जोर से धड़क रहा था।

कुछ ही क्षण बाद—एक मधुर, मीठी गायिकी हवा में गूंज उठी।

वह तालाब में गीत गाती हुई नहा रही थी।

नितिन ने सावधानी से आँखें खोलीं…

और जैसे ही लड़की का चेहरा दिखा—वह दंग रह गया।

लड़की का चेहरा हूबहू मोहिनी जैसा था। उसकी साँसें रुक-सी गईं।

नितिन डरते-डरते उसके पास पहुँचा। लड़की उसे देखकर मुस्कुराई—एक अजीब, सम्मोहित कर देने वाली मुस्कान।

नितिन हकलाया—

"तुम... कौन हो? मुझे ऐसे क्यों देख रही हो? क्या तुम मुझे जानती हो? गाँव वाले कहते हैं तुम भूतनी हो... अगर सच में हो, तो मेरे सामने जिंदा कैसे खड़ी हो?"

लड़की कुछ नहीं बोली। बस चुपचाप बैठकर उसे देखती रही—जैसे वह उसे अपनी ओर बुला रही हो। जब नितिन नहीं हिला, तो लड़की धीरे-धीरे उसके चारों ओर घूमकर बोली—**"इतने वर्षों से मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी...**

तुम्हारे लिए ही मैं यहाँ रुकी रही...

और तुम्हारी वजह से ही मैंने इतने पुरुषों की जान ली है..."

यह सुनकर नितिन के पैरों में जान ही नहीं रही।

वह पत्थर की मूर्ति बन गया। घबराहट में उसने पीछे हटने की कोशिश की, लेकिन तभी लड़की अचानक उससे लिपट गई।

उसकी पकड़ बेहद ठंडी... और बेहद मजबूत थी। नितिन ज़मीन पर गिर पड़ा।

उसके आसपास एक अजीब, धीमी महक फैलने लगी जिसने नितिन को मदहोश-सा कर दिया। उसने कुछ बोलने की कोशिश की, पर आवाज़ गले में ही अटक गई।

अगले ही पल—

लड़की ने अपने होंठ नितिन के होंठों पर रख दिए। क्षणभर में उसका शरीर अकड़ने लगा…दिल की धड़कनें धीमी होने लगीं…

उसी समय, वीरानगढ़ गाँव

गाँव के सभी लोग हवेली के बाहर इकट्ठा थे। वह हवेली, जिसका दरवाज़ा कभी खुला नहीं…आज पूरी तरह खुला हुआ था।लोग डर से सहमे हुए थे। तभी वीर सिंह वहाँ पहुँचा। **"क्या हुआ? सब यहाँ क्यों खड़े हो?"**

एक आदमी बोला—**"वीर… हवेली का दरवाज़ा खुला है! आज तक कोई इसे नहीं खोल पाया!"**

वीर के चेहरे का रंग उड़ गया। वह फुसफुसाया—**"नितिन… मैंने मना किया था उसको…"**

लोगों ने उसकी बात सुन ली। सबकी निगाहें वीर पर टिक गईं। **"तो क्या ये उसी शहर वाले लड़के ने किया है?"** भीड़ में गुस्सा भरने लगी। उसी समय झाड़ियों के पीछे से कोई आता दिखाई दिया। धीरे-धीरे वह पास आया… और सबकी आँखें फटी रह गईं—

वह नितिन था। बिल्कुल ज़िंदा। गाँव वाले चिल्ला उठे—**"ये ज़िंदा नहीं है! ये भूत है! इसकी मौत हो चुकी है!"** अफरातफरी मच गई। लोग भागने लगे।

नितिन चिल्लाया—**"मैं भूत नहीं हूँ! मैं ज़िंदा हूँ! मुझे कुछ नहीं हुआ!"** वह वीर सिंह के पास गया। वीर डर रहा था, पर नितिन ने उसका हाथ पकड़ लिया। वीर को महसूस हुआ कि वह सच में ज़िंदा है। उसने गाँव वालों को शांत किया।

पर तभी एक आदमी दौड़ता हुआ आया—**"वो… मोहिनी ने फिर एक आदमी को मार दिया!"** गाँव वाले नितिन को घूरने लगे। उन्हें लगने लगा कि सारी मुसीबतें उसी की वजह से हैं।

मुखिया आगे आया—**"तुमने हवेली का दरवाज़ा खोला। अब मोहिनी किसी को नहीं छोड़ेगी। तुम्हारी भलाई इसी में है—तुम इस गाँव से अभी निकल जाओ। जब से तुम आए हो, मौतें हो रही हैं। तुम यहाँ नहीं रह सकते।"**

नितिन हड़बड़ाया—**"लेकिन मैं उससे मिला हूँ—वह—"** मुखिया ने झट से डाँट दिया—

"हमें कुछ नहीं जानना! तुम अभी गाँव छोड़ो!

वरना यह गाँव बच नहीं पाएगा!"

CHAPTER 9:
माहिरा का प्यार है

नितिन गाँव वालों को समझाने की कोशिश कर ही रहा था। तभी वीर सिंह बीच में बोलता है आप सब शांत हो जाइए। इस लड़के की जिम्मेदारी मेरी है और अब से नितिन की वजह से गाँव में कोई ओर मौत नहीं होगी|

आप सब अपने अपने घर चले जाएंगे इतना बोलकर वीर सिंह नितिन को वहाँ से ले जाता है एक जंगल के रास्ते से होते हुए वीर किसी पुराने वीरान मंदिर के सामने ले जाकर खड़ा कर देता है|

तो कुछ देर शांत रहने के बाद वीर एक गहरी साँस लेते हुए बोलता है क्या तुमने जो मंदिर देखा था वो यही है|

नितिन हाँ में सिर हिलाते हुए बोलता है ये तो वही मंदिर है पर वीर ये सब क्या हो रहा है? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा एक तरफ़ गाव वालों को मेंरी बातों पर यक़ीन नहीं है और दूसरी तरफ़ तुम मुझे उसी मंदिर के सामने लाके खड़ा कर दिया है

जिसे मैंने अपने सपने में देखा था। ये क्या है वीर नितिन के कंधों पर हाथ रखते हुए बोलता है तुमने जो देखा वो भी सही है और जो गाव वाले बोल रहे हैं वो भी सही है ये काल भैरव मंदिर है

मोहिनी की कहानी इसी मंदिर से शुरू हुई थी। और मोहिनी के बारे में तो तुम जानते ही हो|

इस मंदिर के बारे में मैं तुम्हें बताता हूँ......... इस मंदिर को लेकर यूँ तो बहुत सी कहानियां है कुछ लोग बोलते हैं उसको यहाँ जला दिया गया था तो कुछ बोलते हैं की जब से मोहिनी को मारा है तब से उसकी आत्मा ने यहाँ क़ब्ज़ा कर लिया है और वो यहाँ किसी को पूजा नहीं करने देती है

तो सच तो कोई नहीं जानता कि नितिन बड़े ध्यान से वीर की बात सुन रहा था|... कुछ सोचते हुए बोला तुम जो कुछ भी बोल रहे हो वो सब सच है

तो कोई भी भूतनी आत्मा मंदिर में कैसे जा सकती है मंदिर तो पवित्र होता है..।।

वीर सिंह कुछ सोचते हुए बोलता है की तुम है तो सही रहे हो............ कोई भूतनी मंदिर के अंदर नहीं जा सकती? मोहिनी कैसे जा सकती है? कुछ तो गहरा राज है ?

चलो घर चलते हैं अंधेरा भी काफ़ी हो गया है और माहिरा भी हमारी चिंता कर रही होगी कुछ देर बाद दोनों घर पहुँच जाते हैं

और सीधा किताबों वाले कमरे में चले जाते हैं और वीर दूसरी ओर कुछ ढूँढ रहा था| तभी नितिन की नजर हवेली वाली किताब पर पड़ी किताब पर मोटा कवर लगा हुआ था| और मोटे-मोटे अक्षरों में कुछ शब्द लिखे हुए थे|

किताब के आधे अक्षरों का रंग बदल गया था और आधे अक्षर पहले जैसे थे| किताब के कोने में लेखक का नाम लिखा हुआ था मगर पुराने किताब होने की वजह से लेखक का नाम बढ़ाना मुश्किल था|

नितिन किताब की ओर इशारा करते हुए बोलता है इस किताब का नाम दो रंग में कैसे हैं ये वीर एक पल तो किताब की ओर देखता है और फिर अपना चश्मा सही करते हुए बोलता है।

यह कोई साधारण किताब नहीं है तुम जाने अनजाने में अतीत का हिस्सा हो और तुमने अतीत की कहानी को फिर से शुरू कर दिया है

अब जो होगा उसे रोकना बहुत मुश्किल है वीर की बातों से नितिन काफ़ी हद तक डर गाया था| ये डर उसके चेहरे पर साफ़ देखा जा सकता था वीर नितिन की ओर पानी का गिलास करते हुए बोलता है ये एक रहस्यमयी किताब है हर कोई इसे नहीं पढ़ सकता इस किताब को वही व्यक्ति पढ़ सकता है

जिससे नित्यति ने चुना होगा | मेरे दादाजी ने ये किताब हम देते हुए कहा था.........इस किताब में एक समस्या का हाल है परंतु इसे पड़ेगा वही जो इस कहानी से जुड़ा होगा|

नितिन ने वीर की बात से सहमति जताते हुए कहा हाँ अगर ऐसा है तो तुम सही भी हो सकते हो नितिन कि इस बात पर..वीरसिंह ग़ुस्से से बोलता है सही हो मतलब सच यही है मैं क्या तुमसे झूठ बोलूंगा?

मोहिनी इस मंदिर से जुड़ी हुई है देखो ऐसा है जब मेरे दादाजी ने मुझे यह किताब दी थी| तब हमें सब बताया था और इस किताब को संभालने की ज़िम्मेंदारी भी दी थी|

कि नितिन हसते हुए बोलता है हाँ हाँ हाँ मान लिया तुम बहूत समझदार हो सही बोल रहे हो|

तभी माहिरा वह आ जाती है और वीर से बोलती है भैया मुझे आपसे बात करनी है वीर किताब टेबल पर रखते हुए बोलता है

हाँ क्या हुआ माहिरा?

अभी भी नितिन से नजर नहीं मिला रही थी। नितिन बिना कुछ बोले अपने कमरे में चला गया थोड़ी देर बाद जब माहिरा नितिन के कमरे में दूध लेकर

आती है तो नितिन अपने फोन में लगा हुआ था उसने माहिरा की तरफ़ देखा भी नहीं

माहिरा दूध का गिलास आगे बढ़ाती है जैसे ही नितिन दूध का गिलास लेने के लिए हाथ बढ़ाता है उसका हाथ माहिरा के हाथ को छु गया नितिन झटके से उठता है उसका संतुलन बिगड़ गया और वो माहिरा से टकराकर गिर गया|

माहिरा ठीक नितिन के ऊपर गिरी हुई थी। वो नितिन की गहरी आंखों में देखें जा रही थी। दोनों एक दूसरे के इतने करीब थे कि उनके होठों में टकराने भर की देर थी। नितिन कुछ बोलता उससे पहले माहिरा ने अपने होठ नितिन के होठों पर रख दिए। दोनों एक दूसरे की गर्म सांसों को महसूस कर रहे थे। नितिन माहिरा की खुशबू में खो गया था।

माहिरा नितिन की आंखों में आंखें डालती हुई धीरे से बोलती है

I love you…… नितिन मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूं तुम क्या सोचोगे इस डर से कभी नहीं बोला की मैं तुमसे प्यार करती हु। नितिन माहिरा को अपने से अलग करते हुए बोलता है। माहिरा मैं तुमसे पहली मुलाकात में ही दिल दे बैठा था।

तुम ही मुझे हर वक्त नाराज रहती थी इसलिए कुछ बोला ही नहीं। अपनी बात कहते हुए नितिन माहिरा के करीब आ गया था उसको उसकी कमर से पकड़ते हुए अपना दूसरे हाथ से उसके कान को प्यार से और से छूते हुए बोला| **"I love you mahiraa"** नितिन की दिल की बात उसके जुबान पर आते ही माहिरा ने उसको गले से लगा लिया|

अचानक से जोर से बिजली कड़की डर की वजह से माहिरा ने अपनी पकड़ मजबूत कर ली फिर कुछ पल में ही छमाछम बारिश होने लगी|इस अचानक की बारिश में माहिरा और नितिन एक दूसरे के काफी करीब आ गए थे| माहिरा

के चेहरे से साफ पता चल रहा था कि वो कितनी खुश थी। उसकी मुस्कान देख नितिन ने उसको गोद में उठा लिया और बेड कि ओर ले जाने लगा। उनके चेहरे पर एक ही चमक थी। और आखों में एक सकून.. नितिन माहिरा को एक टक देखे जा रहा था।

माहिरा ने जैसे ही अपने लम्बे बालो को बांधने के लिए पकड़ा तो नितिन ने उसके को हाथ पकड़ लिया। और उसे अपनी ओर खींचते हुए बोला रहने दो ऐसे ही अच्छी लग रही हो। कमरे कि मध्यम रोशनी में नितिन को माहिरा का चेहरा हल्का हल्का दिख रहा था। दोनो एक दूसरे में पूरी तरह खो गए थे।

धीरे-धीरे कब उनके शरीर से उनके कपडे हट गए उन्हे पता भी नहीं चला। नितिन की उँगलियाँ माहिरा के बदन को धीरे-धीरे सहला रही ही थी। साथ ही उसके होठ माहिरा के होठों से सरकर नीचे जाने लगे थे। गर्दन से होते हुए| वो माहिरा के हर हिस्से को चूम रहा था। माहिरा अंदर तक सहर रही थी।

नितिन के हर छुअन पर उसे पहले किसी ने भी इस तरह नहीं छुआ था। थोड़ी देर बाद दोनों एक दूसरे की बाहों में सुकून के साथ लेटे हुए थे| और माहिरा नितिन के कंधे पर सर रख कर सोई थी। नितिन बस एक टक माहिरा को देखे जा रहा था।

CHAPTER 10:
बर्थ मार्क

सुबह के 4 बज चुके थे। और नितिन की आँखों में नींद का कोई नामो-निशान नहीं था वो बस बिना पलक झपकाए माहिरा की ओर देखे जा रहा था|

मानो माहिरा सी सुन्दर लड़की उसने कभी न देखी हो तभी माहिरा की आँख खुल जाती है वो हल्की खुली आँखों से ही नितिन को देखने की कोशिश कर रही थी| माहिरा इतनी गहरी नींद में थी उसे समझ नहीं आ रहा था| कि नीतिन सच में उसके पास हैं या फिर वो एक ख़ूबसूरत सपना देख रही है और वो बस नितिन को पास रखना चाहती थी और अगर ये उसका सपना था तो वो उसे टूटने नहीं देना चाहती थी|

तभी नितिन माहिरा के क़रीब आ जाता है ओर अपने होठों को फिर से माहिरा की होठों पर रख दिया है इसी एहसास के साथ माहिरा की पूरी नींद खुल जाती है और वो एक झटके से नितिन को अपने से दूर कर देती है और बिना कुछ बोले अपने कमरे में चली जाती है माहिरा का यह बर्ताव नितिन को उलझन में डाल रहा था| आख़िर माहिरा ऐसे उठा के क्यों चली गई?

थोड़ी देर में सुबह हो गई| वीर नितिन के कमरे में आ जाता है तो नितिन को वहाँ नहीं पाता कुछ ही पल में नितिन जब कमरे में आता है तो अपने सामने वीर को पाता है वीर को ऐसे अचानक सामने देखकर नितिन के चेहरे का रंग उड़ गया था|

उसे मन ही मन में यह डर भी था कि कल रात को माहिरा और उसके बीच जो कुछ भी हुआ था। वो माहिरा ने कही वीर को तो नही बता दिया|

ये सब सोचते-सोचते नितिन का पूरा बदन पसीने से भी गया.. ये घबराहट उसके चेहरे पर साफ़ देखी जा सकती थी। तभी वीर सिंह नितिन को बैठने का इशारा करते हुए बोलता है देखो तुम आज भी उस मंदिर में नहीं जाना और न ही कोई ऐसा जगह जाना जहाँ तुम अपने आप को और गाँव वालों को किसी नई मुसीबत में डालो.. मैं दो दिन के लिए गाँव से बाहर जा रहा हु।

किसी नई मुसीबत में पड़ जाओगे तो मैं बचा भी नहीं पाऊँगा वीर की यह बात सुनकर नितिन ने एक गहरी साँस ली| और बोला हाँ हाँ तुम चिंता मत करो मैं कोई भी ऐसा काम नहीं करूँगा वैसे तुम जा कहाँ रहे हो ऐसे अचानक। देखो मैं अभी कुछ नहीं बता सकता मैं तुम्हें आकर सब बताता हूँ अगर माहिरा पूछे तो उसे कुछ मत बताना अगर उसे पता चला तो वो मुझे नहीं जाने देगी|

अभी मैं जाता हूँ अगर माहिरा पूछे तो उसे बोलना मैं कुछ काम से बाहर गया हूँ कुछ बताया नहीं वीर सिंह का ऐसा बर्ताव नितिन को कुछ समझ नहीं आ रहा था | आख़िर वीर सिंह कहा जा रहा था जिसके बारे में वो किसी को कुछ भी नहीं बताना चाह रहा था|

नितिन ये सब सोच ही रहा था। तभी माहिरा वहाँ आ जाती है हाथ में खाना लिए बस एक टक नितिन को देखिए जा रही थी ऐसा लग रहा था| जैसे माहिरा जम गई हो नितिन की पीठ पर एक अजीब-सा निशान था माहिरा को समझ नहीं आ रहा था|

कल रात को नितिन के शरीर पर कोई निशान नहीं था। अचानक हाथ उसके शरीर पर ये निशान कहाँ से आया था और निशान देखने में भी काफ़ी पुराना लग रहा था माहिरा अपने ख़यालों में खोई हुई थी तभी नितिन पीछे घूमता है|

माहिरा को अपने पीछे पाकर डर गया था| नितिन एक लंबी साँस लेते हुए बोलता है अरे बाप रे!!!!! तुम एक बार में मुझे मार क्यों नहीं देती ये बार बार

पीछे आकर डरा रही हो| शर्ट पहनते हुए माहिरा को इशारा करता है माहिरा बोली अरे वो तुम्हारी पीठ पर ये निशान कैसा?? नितिन हस्ते हुए माहिरा से बोलता है| हाँ हाँ तुम अब मुझे छूने के बहाने ढूंढ रही हो अब मैं हूँ ही इतना सुंदर तुम्हारा ऐसा करना लाज़मी है | इस पर माहिरा चिढ़ते हुए बोली अपनी तारीफ़ करना बंद करो खाना खा लो यहीं रखा है मुझे और भी काम है

नितिन मन ही मन में मुस्कुराते हुए खाना खाने लग गया था कुछ देर में नितिन की पीठ पर अजीब सा दर्द हो रहा था। वही दर्द उसके हाथ पर भी हो रहा था| परंतु हाथ पर कोई निशान नहीं था | तभी नितिन को पायलो की आवाज़ सुनाई देती है एक धुआँ पूरे कमरे में फ़ैल गया था|

तभी किसी ने उसकी गर्दन से होते हुए सीने पर हाथ फहराया जिसकी वजह से नितिन के बदन में सरसराहट दौड़ गई साथ ही पूरे कमरे में एक रहस्यमय हँसी की आवाज़ गूँज रही थी| नितिन घबराते हुए बोला कौन हो तुम? अपना चेहरा क्यों नहीं दिखाती|

CHAPTER 11:
मोहिनी की अंतिम चेतावनी

अचानक से पूरे कमरे में एक सन्नाटा पसर गया था| नितिन को जो कमरे में औरत की परछाई दिख रही थी| वो भी ग़ायब हो गई थी. इस सन्नाटे से नितिन और ज़्यादा सहम गया था|

उसका पूरा शरीर पसीने से भी चुका था| उसकी हैरानी का कोई ठिकाना नहीं था| आख़िर ऐसे कैसे अचानक से कोई ग़ायब हो सकता है….. ये सब क्या हो रहा है??

तभी दरवाज़े पर किसी ने खटखटाया नितिन हकलाते हुए पूछता है कौन है?? दरवाज़े के दूसरी तरफ़ से आवाज़ आती है मैं माहिरा क्या तुम्हें आज कमरे से बाहर नहीं आना है।

सुबह से तुमने दरवाज़ा तक नहीं खोला है. नितिन तुम ठीक तो हो ना क्या हुआ कुछ बताओ? माहिरा की आवाज़ सुनकर नितिन की घबराहट कम हो गई.. थी अपना पसीना पोछते हुए|

नितिन ने एक ही झटके से माहिरा को गले लगा लिया और धीरे धीरे माहिरा पर अपनी पकड़ मज़बूत कर ली ऐसा लग रहा था| मानो जैसे वो माहिरा को कभी खोना नहीं चाहता हो.. माहिरा नितिन की पीठ पर हाथ फिराते हुए बोलती है क्या हुआ नितिन तुम इतने घबराए हुए क्यों को सब ठीक तो है ना??

नितिन माहिरा को अपने से अलग करते हुए बोलता है| माहिरा तुम यक़ीन नहीं करोगी अभी मेरे साथ बहुत अजीब सा कुछ हुआ……….. मेरे कमरे में पता नहीं कहाँ से धुआँ फैल गया पायलो की आवाज़ आ रही थी| और

एक औरत का साया दिख रहा था अजीब- सा उसकी डरावनी हसी से पूरे कमरे में गूँज रही थी और फिर से ही अजीब तरीक़े से ग़ायब हो गई.

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है मेरे साथ क्या हो रहा है और क्यों नितिन के चेहरे पर घबराहट साफ़ देखी जा सकती थी| इस पर माहिरा बोलती है|

देखो मैं तुम्हें डराना नहीं चाहती हूँ और ना ही तुम्हें ज़बरदस्ती कुछ मानने के लिए मना रही हूँ

पर तुम जो कुछ भी देख रहे हो| तुम्हारे साथ ज़ो कुछ भी हो रहा तुम्हारा कोई व्हम नहीं है| **ये गाँव वैसा नहीं है जैसा दिखता है इस गाँव के बहुत से रहस्य है| जो आज भी याद बनकर रहते हैं**

जब मैं 12 साल की थी| तब मोहिनी ने लगभग मेरे भैया को मार दिया था| हमारे गाँव के बाहर एक सिद्ध तांत्रिक रहते थे | उन्होंने मोहिनी को बाँध दिया उसके बाद उस तांत्रिक ने इस गाँव के लोगों के लिए कुछ नियम बनाए|

जिससे कोई भी गाँव वाला कभी भी नहीं तोड़ता है और जो बहार से आता है उसी भी नहीं तोड़ने देते हैं|

जिसने भी इस नियम को तोड़ा है मोहिनी ने उसे मार दिया है ये सब बताते हुए माहिरा अचानक से बेहोश हो गई| नितिन माहिरा को उठाने की कोशिश कर रहा था| तभी उसके कंधे पर एक हाथ आता है जैसे ही नितिन पीछे मुड़कर देखता है... उसकी सांसे तेज हो चुकी थी| उसे ऐसा लग रहा था कोई अदृश्य साया उसके सामने खड़ा है| तभी हवा का झोंका आता है उसके बदन मे सरसराहट दौड़ जाती है

अचानक से खिड़की अपने आप खुल गई और फिर से एक तेज़ हवा का झोंका भीतर आया| पर्दों के पीछे से एक धुँधला साया उभरने लगा|

नितिन ने कांपती हुई आवाज़ में कहा… क़ौन हो तुम? मुझसे क्या चाहती हो?

उस साये ने धीरे धीरे आकार लेना शुरू किया अब वे साफ़ दिख रहा था|

आखे अंगारों की तरह लाल...........बाल खुले हुए और होंठों पर एक भयावह मुस्कान| चाँद की चाँदनी में उसका बदन चमक रहा था कोई देखें तो मोहित ही हो जाए.... मैं मोहिनी हूँ तुम्हें इस हवेली का मेरा सच जानना है ना? इसी के साथ पूरे कमरे में एक हँसी गूँजती है

और दूसरी तरफ़ मोहनी गंभीर आवाज में बोलती है **"जिस दिन से तुम इस गाँव में आए हो उस दिन से मेंरा श्राप जाग उठा है|"**

नितिन एकदम जम गया......... उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई उसे समझ नहीं आ रहा था| ये सब उसके साथ क्यों क्या हो रहा है| अचानक से मोहिनी कि आवास और गहरी हो गयी थी|

तूझे वीर सिंह की बहन से प्यार हो गया है| लेकिन ये प्यार इस गाव की बर्बादी का कारण बनेगा तुम्हारे कारण मेरी शक्ति और भी बढ़ गई है| बस **अगली पूर्णिमा तक सब मेरा होगा!!!!!!!**

इतना कहते ही मोहिनी का साया अचानक धुएं में ग़ायब हो गया| कमरे का माहौल पहले से शांत हो गया था| पूरे कमरे में कोई शोर नहीं कोई हलचल नहीं बस नितिन की साँसे और दिल की तेज धड़कन घबराहट में उसका हाथ से पानी का गिलास गिर गया| ओर पानी उछल कर माहिरा के चेहरे पर भी गिर गया| माहिरा अचानक से होश में आ गई नितिन अपने ख़यालों में इतना खोया हुआ था कि |

उसे किसी के आस पास होने का कोई एहसास नहीं हुआ| उसके मन में एक ही बात गूँज रही थी। **अगली पूर्णिमा तक!!!!**

CHAPTER 12:
श्राप की गूँज

मोहिनी की चेतावनी के अब तक नितिन के कानों में गूंज रही थी उसके चहरे पर घबराहट साफ देखी जा सकती थी तभी वीरसिंह वहां आ जाता है और नितिन एक सास में उससे सब बात देता है वीरसिंह कुछ देर तो कुछ नहीं बोलता उसके बाद गंभीर आवाज में बोलता है

"तो फिर... हमें सच का सामना करना ही होगा। अब पीछे लौटने का कोई रास्ता नहीं बचा।"

वीरसिंह की आवाज़ में डर छिपा हुआ था, लेकिन उसके लहजे में दृढ़ता साफ़ झलक रही थी।

नितिन बुरी तरह थका हुआ था। उसकी आँखों के सामने अब भी वही लाल आँखें और मोहिनी की आवाज़ गूँज रही थीं। माहिरा बहार से अंदर आती है उसकी आँखों में बेचैनी और चेहरे पर चिंता साफ़ झलक रही थी। **"भैया... आप ठीक तो हैं? और... नितिन?"**

माहिरा दौड़कर नितिन के पास आई। उसके काँपते हाथों ने नितिन के माथे का पसीना पोंछा। नितिन ने उसकी तरफ देखा, लेकिन कुछ कह नहीं पाया। उसकी नज़रें बस झुकी रहीं।

वीरसिंह ने गंभीर स्वर में कहा –**"माहिरा, आज सच बताने का वक़्त आ गया है। नितिन को अब सब जानना होगा।"**

माहिरा की आँखों में डर और आँसू एक साथ भर आए। उसने धीमी आवाज़ में कहा –**"भैया... अगर नितिन ये सब जान गया, तो वो भी..."**

नितिन ने अचानक बीच में ही बात काट दी – नहीं माहिरा! अब मुझसे कुछ छिपाना मत। मैं पहले ही मोहिनी से मिल चुका हूँ... उसने मुझसे कहा है कि अगर मैंने अगली पूर्णिमा तक अपनी जान नहीं दी, तो पूरा गाँव नष्ट हो जाएगा। यह सुनते ही माहिरा सहर उठी। उसके होंठ कांपने लगे। **"उसने... तुम्हें देख लिया?"** नितिन ने सिर झुका दिया।

कमरे में कुछ देर सन्नाटा छा गया। सिर्फ़ दीये की लौ टिमटिमा रही थी।

वीरसिंह ने गहरी साँस लेकर कहना शुरू किया – **"नितिन... ये गाँव साधारण नहीं है। यहाँ हर पीढ़ी में कोई न कोई मोहिनी के श्राप का शिकार होता है"** मेरी दादी ने इस हवेली में काला व्रत किया था। अमरत्व की लालसा में उसने ऐसी ताक़तों को जगा दिया जिन्हें कभी जगाना नहीं चाहिए था। तब से ये गाँव इस श्राप में जकड़ा हुआ है।

माहिरा धीरे से बोली –**"और अब मोहिनी की नज़र तुम पर है नितिन..."** नितिन ने माहिरा की तरफ देखा। उसकी आँखों में आँसू थे, लेकिन उनमें डर से कहीं ज़्यादा चिंता थी। **"माहिरा ... तुम डर मतो। मैं तुम्हें और इस गाँव को बचाने का रास्ता ज़रूर ढूँढ लूँगा।"**

माहिरा की आँखों से आँसू टपक पड़े। उसने काँपते हुए कहा – **"लेकिन अगर रास्ता तुम्हारी जान से होकर गुजरता है... तो?"**

कमरे में खामोशी छा गई। वीरसिंह भी जवाब नहीं दे पाया। बाहर हवा जोर-जोर से चलने लगी, जैसे आसमान भी इस वार्तालाप का गवाह हो।

नितिन ने आँखें बंद कीं और धीरे से बोला –

"अगर मुझे अपनी जान देकर ये गाँव और तुम दोनों बच सकते हो... तो मैं पीछे नहीं हटूँगा।"

माहिरा चीख पड़ी – **"नहीं! ऐसा मत कहना नितिन। तुम... तुम मेरी ज़िन्दगी हो।"**

उसकी यह बात सुनकर नितिन का दिल काँप गया। उसकी आँखों में पहली बार मोहिनी का डर नहीं, बल्कि माहिरा को खो देने का डर झलक रहा था। तभी अचानक दरवाज़े पर ज़ोरदार दस्तक हुई। वीरसिंह ने चौंककर दरवाज़ा खोला। बाहर गाँव के चार आदमी खड़े थे, उनके हाथों में मशालें थीं।

उनमें से एक ने ऊँची आवाज़ में कहा –

"वीरसिंह! इस परदेसी लड़के को तुरंत गाँव से निकालो। जब से ये आया है, हमारे बच्चे बीमार पड़ रहे हैं, जानवर मर रहे हैं और मोहिनी का आतंक बढ़ गया है। ये अशुभ है!"

नितिन स्तब्ध रह गया। माहिरा घबराकर उसके सामने आ खड़ी हुई।

"नहीं! नितिन निर्दोष है। अगर मोहिनी से लड़ना है तो ये ही हमारी मदद करेगा।" गाँव वाले गुस्से से भड़क उठे।

"माहिरा! तुम उसके साथ खड़ी हो? तो जान लो... अगली पूर्णिमा से पहले ये गाँव तय कर लेगा कि नितिन ज़िंदा रहेगा या नहीं!"

कमरे में सन्नाटा छा गया। नितिन ने पहली बार महसूस किया कि अब उसके पास समय बहुत कम है। उसके कानों में मोहिनी की वही आवाज़ गूँज उठी — **"अगली पूर्णिमा तक..."**

CHAPTER 13:
डर और नज़दीकी

रात गहरी थी। नितिन के मन में बस हवेली के बारे सोच रहा था उस हवेली में दीवारों पर काई जमी थी और वहाँ हवा के साथ दरवाज़ों की चरमराहट ऐसे लग रही थी| जैसे हवेली खुद कोई पुराना रहस्य सुनाना चाहती हो।

नितिन कमरे के कोने में बैठा था, आँखों में बेचैनी और चेहरे पर थकान। मोहिनी की लाल आँखें अब भी उसकी यादों में कौंध रही थीं, और उसकी फुसफुसाहट — **"अगली पूर्णिमा तक..."** — उसके कानों में गूंज रही थी।

तभी दरवाज़ा धीरे से खुला। माहिरा अंदर आई। हाथों में लालटेन थी और चेहरे पर चिंता की लकीरें। उसने लालटेन टेबल पर रखी और धीरे से नितिन के पास आकर बैठ गई। उसके हाथ काँप रहे थे, पर उसने हिम्मत जुटाकर नितिन के माथे पर जमा पसीना पोंछा।

"भैया कह रहे थे कि तुम थक गए हो... लेकिन सच्चाई तो ये है कि तुम टूट रहे हो " उसकी आवाज़ धीमी थी, लेकिन उसमें छिपी फिक्र बहुत गहरी थी।

नितिन ने उसकी ओर देखा, उसकी आँखें नम थीं। उसने होंठ खोले, मगर आवाज़ बहुत धीमी निकली, **"अगर मैं हार गया तो...?"**

माहिरा ने तुरंत उसकी बात काटी। उसने अपनी उंगली उसके होंठों पर रख दी। **"श्श्श... हार की बात मत करो। जब तक मैं हूँ, तुम अकेले नहीं हो।"**

कुछ पल दोनों खामोश रहे। घर के बाहर हवा सरसराती रही, मगर कमरे के भीतर एक अलग ही सन्नाटा था — ऐसा सन्नाटा जिसमें डर से ज्यादा अपनापन था।

नितिन ने धीरे से माहिरा का हाथ अपने हाथ में ले लिया। माहिरा की उंगलियाँ ठंडी थीं, लेकिन उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। नितिन को महसूस हुआ कि उसकी धड़कनों का शोर उसके कानों तक पहुँच रहा है। **"तुम्हें डर नहीं लगता?"** नितिन ने पूछा।

माहिरा ने हल्की मुस्कान दी, मगर आँखों में आँसू थे। **"डर तो है... लेकिन तुम्हें खोने का डर, मोहिनी से ज्यादा है।"**

नितिन कुछ पल उसे देखता रहा। उसकी थकी हुई आँखों में पहली बार चमक लौट आई थी। उसने माहिरा को और करीब खींचा, उसके सिर को अपने कंधे पर टिका दिया। माहिरा काँप रही थी, लेकिन उस काँपने में डर से ज्यादा अपनापन था।

"माहिरा..." नितिन ने फुसफुसाया।

"हूँ?" उसने बिना सिर उठाए जवाब दिया।

"अगर मैं... वापस न आया तो?"

माहिरा ने तुरंत उसका चेहरा अपने हाथों में पकड़ लिया और उसकी आँखों में झाँकते हुए बोली, **"ऐसी बातें मत करो। मैं जानती हूँ... तुम लौटोगे। क्योंकि अब तुम्हारी लड़ाई सिर्फ तुम्हारी नहीं रही... इसमें मैं भी हूँ।"**

नितिन ने उसकी आँखों में देखा। वहाँ आँसू थे, पर उन आँसुओं के पीछे एक अद्भुत ताकत भी थी। उसने पहली बार महसूस किया कि माहिरा सिर्फ डर में उसका सहारा नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत है।

उसी वक्त बाहर से हवा का एक तेज़ झोंका आया। हवेली के आँगन में पड़े पुराने पत्थर पर उकेरा पंचरेखा वृत्त हल्का चमक उठा। वीरसिंह वहाँ पहुँचा और गंभीर स्वर में बोला,

"यही है पंचरेखा वृत्त। यहीं से हमारी बर्बादी शुरू हुई थी। और अब... यही हमें सच का सामना कराएगा।"

नितिन ने उस वृत्त की ओर देखा, तभी उसकी कलाई पर हल्की सी जलन हुई। उसने नीचे देखा — त्वचा पर एक लाल निशान उभर आया था। मानो कोई अनदेखा हाथ उस पर मुहर लगा रहा हो।

वीरसिंह ने धीमी आवाज़ में कहा, **"भाग्य ने चुन लिया है... अब से तुम्हारी हर साँस इस श्राप की गवाही है।"**

नितिन के चेहरे पर डर साफ़ झलक रहा था। तभी माहिरा ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। उसकी पकड़ में घबराहट भी थी, लेकिन उससे ज्यादा भरोसा।

"जो भी होगा... हम साथ झेलेंगे।"

आगन में अचानक वही फुसफुसाहट गूँजी — "पूर्णिमा..."

नितिन का दिल धड़क उठा। लेकिन इस बार उसने नज़रे अंधेरे में नहीं, माहिरा की आँखों में टिकाई। और पहली बार... उसे लगा कि शायद इस डर के पार भी कोई उम्मीद है।

CHAPTER 14:
सच का खुलासा

सुबह की धूप हल्की-हल्की खिड़की से सीधा नितिन के चेहरे पर पड़ रही थी नितिन देर तक सो नहीं पाया था।

पिछली रात के लाल निशान अब उसकी कलाई पर साफ दिखाई दे रहे थे। वह सोच ही रहा था कि तभी वीरसिंह हाथ में एक पुरानी किताब लिए अंदर आया। किताब की जिल्द फटी हुई थी! और उस पर काले धागे लिपटे थे।

"ये किताब... हमारी वंश की सबसे बड़ी भूल का सबूत है।" वीरसिंह की आवाज़ भारी थी। नितिन चौंककर उसकी ओर देखने लगा।

"क्या सचमुच... इस गाँव को श्राप तुम्हारी ही दादा की वजह से मिला?"

वीरसिंह ने गहरी साँस ली। **"हाँ- और नहीं भी , मेरी दादी रुक्मिणी। उन्होंने अमरत्व की लालसा में 'कालव्रत' साधा था। और उसकी कीमत इस गाँव को देनी पड़ी। हर पीढ़ी में किसी एक को चुना जाता है... ताकि श्राप जिंदा रहे। इस बार... वो चिन्ह तुम्हारे ऊपर है, नितिन।"**

कमरे में कुछ पल खामोशी छा गई। नितिन की नज़रें झुक गईं उसकी आँखों में डर था, मगर साथ ही एक अजीब-सी हिम्मत भी।

इसी बीच माहिरा धीरे-धीरे अंदर आई। उसके हाथ में चाय के दो कप थे। वह नितिन के पास आई और एक कप उसके सामने रख दिया। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी, लेकिन आँखों में चिंता अब भी गहरी थी।

“लो… पियो। रात भर जागे हो ना।”

नितिन ने कप थाम लिया, लेकिन उसकी नज़रें माहिरा से हट नहीं पा रही थीं। वह बोला, **“तुम्हें डर नहीं लगता? हर रोज़… नई सच्चाई सामने आ रही है।”**

माहिरा ने हल्की हँसी के साथ उसकी ओर देखा, **“डर तो है… लेकिन तुम्हें खोने का डर उससे बड़ा है।”**

दोनों के बीच फिर वही चुप्पी उतर आई, मगर इस बार उस चुप्पी में एक अनकहा इज़हार था। नितिन ने धीरे से माहिरा का हाथ थाम लिया। उसकी उंगलियाँ ठंडी थीं, लेकिन उस स्पर्श में सुकून था।

“माहिरा …” उसने धीमें स्वर में कहा, “अगर रास्ता मेरी जान से होकर गुजरे… तो?”

माहिरा की आँखें भर आईं। उसने काँपते होंठों से जवाब दिया**, “तब भी मैं तुम्हें उसमें से निकाल लाऊँगी। मैं… तुम्हें खो नहीं सकती।”**

नितिन की आँखें नम हो गईं। उसने माहिरा को करीब खींच लिया और उसकी आँखों में देखते हुए बोला, **“अब मुझे सिर्फ तुम्हारा डर है। मोहिनी का नहीं।”**

अचानक हवा का तेज़ झोंका आया। कमरे में रखा दीया टिमटिमाने लगा। वीरसिंह ने किताब खोली और ज़मीन पर चूने से एक बड़ा घेरा खींचा। बीच में रखा गया तीन बातियों वाला दीप—तेज़ी से जल उठा।

“ये दीप ही हमारी आखिरी उम्मीद है।” वीरसिंह बोला।

नितिन ने चौककर पूछा, **“क्या सचमुच ये दीप… मोहिनी को रोक सकता है?”**

“दीप तभी बचेगा जब इसमें तीन लौ जलती रहेंगी—आस्था, साहस, और प्रेम। अगर इनमें से कोई भी बुझ गई… समझो श्राप ने हमें निगल लिया।”

कमरे का माहौल और भारी हो गया। माहिरा ने धीरे से नितिन की ओर देखा, **“तीसरी लौ… मेरे भरोसे पर है?”**

दोनों की नज़रों में अब डर नहीं था, बल्कि एक अनकहा वादा था। तभी बाहर से शोर सुनाई दिया। गाँव वाले चौपाल पर जमा थे, मशालें जलाए, गुस्से से भरे।

“जब से ये परदेसी आया है… बच्चों की तबीयत बिगड़ रही है, जानवर मर रहे हैं, और मोहिनी का आतंक बढ़ गया है। इसे गाँव से निकालो!” एक गाँववाले ने चीखते हुए कहा।

नितिन स्तब्ध खड़ा रह गया। मगर माहिरा और वीरसिंह तुरंत उसके सामने आ गए।

“नहीं! ये निर्दोष है। अगर मोहिनी से लड़ना है… तो सिर्फ नितिन ही हमारी मदद करेगा।”

गाँव वाले आपस में बहस करने लगे। कुछ उसकी बात से सहमत हुए, कुछ और भी गुस्से से भड़क उठे। मुखिया ने सबकी ओर देखते हुए फैसला सुनाया,

“अगली पूर्णिमा तक… नितिन को ये दीप जलाए रखना होगा। अगर लौ बची रही… तो ये गाँव इसे अपनाएगा। और अगर बुझ गई… तो परंपरा के मुताबिक इसे बलि देनी होगी।”

नितिन की साँसें तेज़ हो गईं। पूरा गाँव उसकी तरफ देख रहा था। और उसके कानों में फिर वही आवाज़ गूँज उठी—

“अगली पूर्णिमा तक…”

CHAPTER 15:
मोहिनी का सच

रात का सन्नाटा घर पर पूरी तरह हावी था। बाहर तेज़ हवाएँ चल रही थीं और खिड़कियों से आती ठंडी सरसराहट भीतर अजीब बेचैनी भर रही थी। घर के बीचोबीच रखा दीप अब भी जल रहा था, लेकिन उसकी लौ तेज़ हवा में काँप रही थी।

अचानक दरवाज़ा ज़ोर से चरमराया। सबकी सांसें थम गईं। वीरसिंह और माहिरा ने एक-दूसरे की ओर देखा, और फिर नितिन की ओर। नितिन धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ा।

जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, सामने लाल आँखों और बिखरे काले बालों के साथ मोहिनी खड़ी थी। उसकी उपस्थिति से ही पूरा घर थरथरा उठा। दीवारों से जाले झरने लगे और दीपक की लौ एकदम नीली हो गई।

"तो... आखिरकार तुम खुद ही सामने आ गए ," मोहिनी ने ठंडी हँसी के साथ कहा।

नितिन ने काँपते हुए भी हिम्मत जुटाई, **"अगर तू ही इस श्राप की जड़ है... तो आज तुझे ही इसका जवाब देना होगा।"**

मोहिनी की आँखों में ग़ुस्सा नहीं, बल्कि एक अजीब-सा दर्द था। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी, और जैसे ही उसकी नज़र नितिन से टकराई, अचानक सब कुछ धुंधला होने लगा।

नितिन के कानों में गूंजने लगी एक अलग आवाज़… मंदिर की घंटियाँ, बाजे-गाजे, और किसी स्त्री की हँसी।

नितिन ज़मीन पर गिर गया। उसकी आँखें बंद हो गईं और उसका मन गहरे अंधकार में उतर गया। कुछ ही पल में उसने खुद को एक बिल्कुल अलग दुनिया में पाया।

उसने देखा — सामने एक भव्य नगर था, ऊँची-ऊँची हवेलियाँ, मंदिरों की घंटियाँ और रंग-बिरंगी चौक-गलियाँ। वहाँ लोग उसे **"हर्षवर्धन"** कहकर पुकार रहे थे।

नितिन के लिए यह कुछ भी नया नहीं था वो पहले भी यहां आ चूका था

वह आगे बढ़ा तो देखा एक युवती मंदिर की सीढ़ियों पर खड़ी उसकी ओर देख कर मुस्कुरा रही है। उसकी आँखें वही थीं — गहरी, सम्मोहक, लेकिन उनमें नफ़रत नहीं… सिर्फ़ मासूमियत और प्रेम।

हर्षवर्धन के होंठों से खुद-ब-खुद निकला, **"मोहिनी…"**

हाँ, वही थी। मगर उस वक्त वह मोहिनी नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की थी। उसके गले में फूलों की माला थी और हाथ में पूजा की थाली।

उसकी हँसी में ऐसा आकर्षण था कि पूरा नगर ठहर जाता था।

दोनों की नज़दीकियाँ, मंदिर की सीढ़ियों पर पहली मुलाक़ात, साथ बिताए पल… सब कुछ एक झटके में नितिन की आँखों के सामने आ गया।

लेकिन अचानक दृश्य बदल गया। उसी नगर में एक साधु आया, जिसने नगरवासियों को चेतावनी दी —

"ये लड़की नाग कन्या है... अगर इसने किसी मनुष्य से विवाह किया, तो पूरा नगर श्रापित हो जाएगा।"

लोगों ने अफवाहों पर यक़ीन कर लिया। उस समय हर्षवर्धन ने सबके खिलाफ खड़े होकर कहा, **"नहीं! ये साधारण लड़की नहीं, बल्कि मेरा प्रेम है इसमें मेरी जान बस्ती है । इससे बड़ा कोई सत्य नहीं।"**

लेकिन भीड़ ने उसकी बात न मानी। अंधविश्वास और लोभ के चलते नगर के सरदारों ने उस लड़की को **'नगरस्त्री'** कहकर बलि करने की बात की इस पर हर्षवर्धन ने उसको बचा लिया

परंतु कुछ दिनों बाद एक रात उस लड़की को नगर वालो ने मिल कर फिर से उसे मारने की कोशिश की

नगर के मुखिया ने उसकी बाली एक शर्त पर मना की.......उसे इस नगर की नगरस्त्री बनना होगा| हर रात उसे दुल्हन बनाना होगा रोज एक मर्द को खुश करेगी| जब हर्षवर्धन को पता चलेगा तो उसने वहां से निकलाने की कोशिश की लेकिन असफल रहा..

नगर वालो ने मिल कर उसे जिंदा जला दिया मंदिर के आँगन में उसकी चीखें गूँजती रहीं। मृत्यु से पहले उस लड़की की आँखें लाल हो उठीं। उसने धरती पर गिरते-गिरते प्रतिज्ञा ली —

"जिस नगर ने मुझे ठुकराया, जिस प्रेम ने मुझे बचा नहीं पाया... मैं उसी नगर की आत्मा बनकर लौटूँगी। और हर पीढ़ी में एक प्रेमी मेरे सामने होगा... या तो वो मुझे चुनेगा, या उसका नगर नष्ट होगा।"

उसकी आत्मा धुएँ में बदलकर मंदिर के शिखर पर जा अटकी। और उसी क्षण से वह **"मोहिनी – नगर स्त्री" कहलाने लगी।**

नितिन की आँखें खुलीं। उसके माथे पर पसीना था और साँसें तेज़। उसने धीरे-धीरे सिर उठाया और देखा — सामने वही मोहिनी खड़ी थी।

लेकिन अब उसकी आँखों में सिर्फ़ ग़ुस्सा नहीं, बल्कि आँसू भी थे।

"देखा नितिन…" मोहिनी फुसफुसाई, "या कहूँ हर्षवर्धन… मैं वही हूँ जिससे तुमने वादा किया था… और जिसे बचा नहीं पाए। आज सदियों बाद तुम फिर में रे सामने खड़े हो।"

नितिन के हाथ काँप उठे। उसने बमुश्किल कहा,

"तो… तू ही है मेरी अधूरी कहानी? तू ही है मेरा पहला प्रेम?"

मोहिनी ने धीरे से सिर हिलाया। **"हाँ… और अब या तो तुम मुझे अपनाओगे… या तुम्हारा ये गाँव मेंरी आग में जल जाएगा।"**

उसके शब्दों से पूरा घर हिल उठा। वीरसिंह और माहिरा दोनों दंग रह गए।

माहिरा की आँखों में डर था… लेकिन दिल में सवाल और भी बड़ा|

CHAPTER 16:
अधूरा इज़हार

रात गहरी थी, बाहर लाल चाँद आसमान पर धीरे-धीरे चढ़ रहा था। घर की दीवारें हवा से हिल रही थीं, मानो आने वाले तूफ़ान की गवाही दे रही हों। मगर कमरे के अंदर का माहौल अलग था — वहाँ चुप्पी, बेचैनी और एक अनकहा आकर्षण था।

नितिन खिड़की के पास खड़ा था, उसकी आँखें अब भी उस दृश्य में अटकी थीं जो उसे अतीत में दिखा था। हर्षवर्धन और मोहिनी का अधूरा प्रेम… उसकी आत्मा तक हिला गई थी।

माहिरा धीरे से कमरे में आई। उसके कदमों की आहट धीमी थी, पर नितिन ने उसे महसूस कर लिया। **"तुम ठीक हो ?"** उसने काँपती आवाज़ में पूछा।

कमरे में एक भारी सन्नाटा पसरा हुआ था।

नितिन ने बिना उसकी ओर देखे धीमी आवाज़ में कहा, **"हाँ… पर समझ नहीं आ रहा, मेरे साथ आखिर ये क्या हो रहा है।"** उसकी आवाज़ में एक अजीब-सी बेचैनी थी।

माहिरा धीरे से उसके बिल्कुल पास आ खड़ी हुई। दोनों की नज़रें मिलीं, और फिर ठहर गईं। उनकी आँखों में नमी थी—नितिन की आँखों में हज़ारों सवाल थे और माहिरा की आँखों में उन सवालों का जवाब छिपा हुआ।

नितिन कुछ कह पाता, उससे पहले ही माहिरा ने अपने काँपते होंठ उसके होंठों पर रख दिए। समय जैसे थम गया। कमरे में बस उनकी धड़कनों की गूंज रह गई थी।

दोनों ने एक-दूसरे की साँसों की गर्मी महसूस हो रही थी । नितिन माहिरा के बालों में उलझ गया, कभी उसकी आँखों में खो जाता, तो कभी उसके चेहरे पर थमी नमी को चूम लेता। माहिरा ने भी खुद को पूरी तरह नितिन के हवाले कर दिया।

नितिन का भी अब कोई काबू नहीं रहा और धीरे-धीरे दोनों के बदन से सारे कपडे हट गए| वो रात मानो उनके लिए अनंत हो गई थी। डर, श्राप और बेचैनी सब पलभर के लिए गायब हो गए। बस रह गया तो एक-दूसरे का स्पर्श और अपनापन।

धीरे-धीरे कब रात ढल गई और सुबह की किरणें खिड़की से भीतर उतर आईं—दोनों को पता ही नहीं चला।

सुबह, माहिरा आँखों में हल्की मुस्कान और चेहरे पर सुकून लिए बस नितिन को देखती रही। उसकी आँखों में पहली बार डर नहीं, बल्कि एक अजीब-सा भरोसा था।

नितिन ने उसकी ओर देखा और हल्की हँसी के साथ कहा,

"तुम्हारे मन में जो सवाल हैं... शायद मैं उन्हें पढ़ पा रहा हूँ। और अब उनका जवाब सिर्फ़ एक है......मैं तुम्हारा हूँ, ... हर हाल में ।"

अचानक से नितिन के आसपास की हवा भारी हो गई। उसके कानों में वही पुरानी मंदिर की घंटियाँ गूँजने लगीं। उसने देखा—फिर वही नगर, वही हर्षवर्धन, और वही युवती… जिसे सब नगरस्त्री कहकर बलि चढ़ा रहे थे।

उसने चीखकर पुकारा, **“मोहिनी… मैं तुझे अकेला नहीं छोड़ूँगा!”**

पर भीड़ की शोर में उसकी आवाज़ दब गई। नितिन की आँखें खुलीं—वह फिर वर्तमान में लौट आया। उसके गले में दर्द था, आँखों में आँसू।

“मोहिनी…” उसने कांपते हुए कहा, “मैं मानता हूँ… उस जन्म में मैं तुझे बचा न सका। पर आज… मैं सच में तेरे सामने खड़ा हूँ। लेकिन इस बार मैं तुझे अपनाकर गाँव को नहीं खो सकता।”

CHAPTER 17:
अग्निपरीक्षा (FINAL ARC BEGINS)

कमरे में भारी ख़ामोशी छा गई थी। दीवारों से साया जैसे चिपक कर साँसें रोके खड़ा हो। तेल के दीये की लौ काँपती जा रही थी, जैसे हवा नहीं… डर उसे हिला रहा हो।

नितिन के बोलने के बाद कमरे में मौत जितनी गहरी चुप्पी छा गई। माहिरा ने उसका हाथ पकड़े रखा था — हाथ ठंडे, साँसे तेज़।

उसकी उँगलियाँ इतनी कसकर नितिन की उँगलियों में गुँथी थीं जैसे छोड़ेगी तो वो कहीं खो जाएगा। और फिर…

एक बेहद धीमी, लेकिन रीढ़ में बर्फ़ उतार देने वाली हँसी सुनाई दी। मोहिनी

"तो आखिर… तुमने फिर वही चुना। लोग। ज़िम्मेंदारी। और मैं?

फिर वहीं छोड़ दी…. जहाँ सदियों से पड़ी हूँ।"

धुंध जैसे ज़मीन से उठ रही हो। उस धुंध में से मोहिनी का चेहरा उभरा — लाल , पर दर्द से भरा।

बाल हवा में लहरा रहे थे, बिना हवा के।

“ये सच है कि तुम मेरा अतीत हो… लेकिन मैं उसमें फँस कर किसी का भविष्य नहीं तोड़ सकता।” और मेंरा क्या?

मैं सज़ा बनकर क्यों जन्मी? मेरे प्यार की क्या कीमत?

सदियों का इंतज़ार... सिर्फ ये सुनने को कि अब मैं किसी और को चुनता हूँ?" उसकी आवाज़ टूटने लगी, और उसके साथ कमरे की हवा भी भारी हो गई। दीये की लौ बुझ गई। पूरा घर जैसे किसी अदृश्य ताकत ने जकड़ ली हो।

अचानक घड़ी की टिक-टिक भी रुक गई। बाहर पेड़-पत्ते एक पल में स्थिर हो गए। सब ठहर गया — जैसे समय को किसी ने पकड़ कर रोक दिया हो।

माहिरा काँपते हुए बोली —**"न-न-नितिन... ये क्या हो रहा है?"**

नितिन ने धीरे से उसकी तरफ देखा — उसकी आँखों में भी डर था — लेकिन हार नहीं।

नितिन (धीमें से) **"वो हमें समय से अलग कर रही है। ताकि ये फ़ैसला सिर्फ मेंरा हो..."** मोहिनी करीब आई— उसकी आँखों में आग नहीं, आँसू थे। बिल्कुल इंसान की तरह... टूटी हुई।

मोहिनी (फुसफुसाते हुए) **"मैंने तुम्हें कभी छोड़ा नहीं, नितिन... तुमने ही हर जन्म में मुझे मारा है। तुमने ही मेंरा अंत लिखा था।"**

नितिन का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा — फिर से वही यादें चमकने लगीं— **एक मंदिर**

— एक विवाह मंडप

— लाल चुनरी

— और आग में गिरती एक स्त्री...

नितिन हिल गया। उसका गला सूख गया। नितिन (कंपती आवाज़ में)

"…मैंने? मैंने तुम्हें मारा था?" मोहिनी (आँसू हँसी में बदलते हुए)

"हाँ… हर जन्म में …अपने 'धर्म' की वजह से।

लोगों की वजह से। ये गाव, ये दुनिया… हमेंशा मेंरे और तुम्हारे बीच आई।"

अचानक दरवाज़ा धड़ाम!! से बंद हुआ। खिड़कियाँ काँपने लगीं। बाहर हवा चीखने लगी जैसे पूरा गाँव दर्द में रो रहा हो।

माहिरा चीखी — **"बस करो! ये प्यार नहीं—ये जुनून है!"** मोहिनी उसकी ओर मुड़ी मोहिनी

"तुम कौन हो? एक जन्म की लड़की। मैं तीन जन्मों का अधिकार लेकर खड़ी हूँ।" वातावरण और भारी हो गया।

माहिरा पीछे हट गई, डर और गुस्से से काँपती।

नितिन (जोर से) **"बस! प्यार अधिकार नहीं होता, मोहिनी।**

और अगर तुम्हारा प्यार मुझे दुनिया से काटता है**… तो वो प्यार नहीं… अभिशाप है!"**

अचानक कमरा भरने लगा — काली छायाएँ, जैसे गाँव के लोग…

उनकी फुसफुसाहट —**"बचाओ… बचाओ… मोहिनी… शाप… अधूरा प्रेम…"**

दीवारों पर हाथों के निशान उभरने लगे। फर्श पर राख जैसे पैर चलते दिखे।

माहिरा रोते हुए फुसफुसाती है:

"ये लोग… ये गाँव वाले हैं नितिन… वो मर चुके हैं…"

नितिन का दिल दहल गया — **"तो सच में … मोहिनी की वजह से…"**

मोहिनी (दर्द से चिल्लाते हुए) **"मैंने किसी को नहीं मारा!! लोगों ने मुझे झूठी, डायन कहा!**

मुझे आग में झोंक दिया — सिर्फ इसलिए कि मैं तुमसे प्यार करती थी!"

कमरा हिलने लगा, दीवारें फटने सी आवाज़ें करने लगीं। माहिरा नितिन से चिपक गई। नितिन ने आँखें बंद कर लीं — जैसे ही आखे बंद की फिर से वही **आग, चीखें, रोशनी — सब कुछ घूमने लगा।** अचानक उसके सामने एक विकल्प प्रकट हुआ —

– एक तरफ माहिरा गाँव और

– एक तरफ मोहिनी और अनंत अतीत

मोहिनी हाथ बढ़ाती है —

"मेरे साथ चलो नितिन…बस एक बार…

हमारा प्रेम पूरा हो जाएगा…" उसकी आवाज़ टूट रही थी —

वो राक्षस नहीं लग रही थी…बस एक टूटा हुआ प्यार।

माहिरा सिसकते हुए कहती है —

"अगर तुमने उसे चुना………तो सिर्फ मैं नहीं, ये पूरा गाँव खत्म हो जाएगा…"

नितिन का दिल फट रहा था। दोनों के आँसू — दोनों की पीड़ा। धीरे-धीरे वो आगे बढ़ा — मोहिनी के ओर … माहिरा कांपते हुए पीछे हट गई। नितिन मोहिनी के सामने जाकर रुक गया। उसने काँपते हुए उसका हाथ पकड़ा —

मोहिनी की आँखों में चमक आ गई। माहिरा की साँस रुक गई।

नितिन (धीरे, स्थिर आवाज़) **“आज मैं भाग नहीं रहा...लेकिन तुम्हारे साथ भी नहीं जा रहा।”** मोहिनी ठिठक गई। आँसू जम गए।

“आज मेरी अग्निपरीक्षा है... और मैं दोनों जन्मों का ऋण चुका कर—इस कहानी को यहीं खत्म करूँगा।”

उसने मोहिनी का हाथ थामकर.... माहिरा का भी हाथ पकड़ लिया।

“तुम शाप से बंधी हो, मोहिनी...

और मैं—आज तुम्हें मुक्त करूँगा।”

बाहर आसमान चीखा। बिजली कड़क उठी। हवा की चीख इंसानी चीख जैसी बन गई। अचानक दरवाज़े पर फिर वही तेज़ दस्तक—**"धड़-धड़-धड़!"** किसी दबी आवाज़ ने पुकारा — **"दरवाज़ा खोलो! वो जाग चुकी है!"**

एक अंतिम फुसफुसाहट—**"अब खेल शुरू..."**

CHAPTER 18:
अग्निकाल: श्राद या मुक्ति

दरवाज़े पर पड़ती तेज़ दस्तकें हवा को भी चीर रही थीं। कमरा काँप रहा था। नितिन धीरे से बोला — **"कौन है वहाँ?"** और बाहर से टूटी, काँपती आवाज़ गूँजी —**"वो गाँव जाग गया है वो भी जाग चुकी है .... भागो यहाँ से!! "**

नितिन ने माहिरा को पीछे किया और दरवाज़ा खोला —बाहर वीरसिंह खड़ा था, साँसें टूटती हुई, माथे पर राख और गंगाजल के छींटे। उसकी आँखों में डर नहीं…— युद्ध था।

"समय आ गया है, नितिन। मोहिनी सिर्फ आत्मा नहीं… वो शाप है। और आज… उसका अग्निकाल शुरू हो चुका है।" नितिन वीरसिंह को झटकते हुए बोलता है कौन आ गयी? कौन सा गाँव ? क्या बोल रहे हो यह सब.........दीवारों पर लगी दीप-ज्योतियाँ अचानक खुद-ब-खुद जल उठीं।

कमरे में धुआँ फैला गया …और दृश्य बदलने लगा। एक पुराना समय......मंदिर की घंटियाँ… लाल चुनरी वाली मोहिनी — लेकिन आँखों में मासूमियत। उसे गाँव वाले घसीट रहे थे। लोग चिल्ला रहे थे —

"पाँप! तांत्रिक! मोहिनी जादूगरनी हैं!" और मोहिनी रोती जा रही थी — **"मैंने बस प्रेम किया था… बस प्रेम…"**

मंदिर की आग में धकेलते हुए एक आदमी चिल्लाया — **"इज़्ज़त और धर्म, प्यार से बड़े होते हैं!"**

और वो आदमी…नितिन जैसा दिखता था।

पिछला जन्म। उसने नज़र फेर ली थी। इस बार नितिन को जो भी दिख रहा था पहले जो कुछ भी उसने अपने अतीत में दिखा था……. उसे बिल्कुल अलग था उसे समझ नहीं आ रहा था क्या सही है क्या गलत वो ऐसा कैसे कर सकता है……………….

मोहिनी की चीख —धरती हिलाकर रख देने वाली। नितिन के चेहरे पे आँसू बहने लगे। नितिन (टूटी आवाज़ में)

“मैंने सच में… उसे मार दिया था

मोहिनी अब सामने थी — आँखों में आग और पानी दोनों। वो राक्षस नहीं — टूटा हुआ प्रेम थी। **“क्या अब भी कहोगे कि मैं गलत हूँ?”**

बाहर गाँव वाले कमरबंद, राख, शंख और ढोल के साथ इकट्ठा हो चुके थे।

एक पुराना मंत्र —**"अग्नि साक्षी, प्राणों की रेखा..."** ज़मीन पर लाल त्रिकोण खींचा गया। बीच में काला धूप, नींबू, हवन, और मिट्टी में गड़ा त्रिशूल.

वीरसिंह (उच्च स्वर) **“आज निर्णय होगा — शाप टूटेगा या गाँव!”**

बच्चों और महिलाओं को घरों में बंद किया जा रहा था। हवा गूंज रही थी — **"देवी! रक्षा करो!"** लेकिन कुछ चेहरे डर से नहीं — नफरत से भरे थे।

जैसे वो फिर से किसी औरत को जला देने को तैयार हों। माहिरा आगे बढ़ी — हल्की काँपती, लेकिन आँखों में आग।

माहिरा **“प्यार बदला नहीं होता, मोहिनी।**

तुम्हें नफरत मिली — पर जो तुम कर रही हो वो इंसाफ नहीं, अंधेरा है।”

मोहिनी हँसती है — लेकिन दुख में **“औरतें ही तो औरतों को नहीं समझतीं…तुम भी मुझे उसी आग में धकेलोगी?”** माहिरा एक कदम आगे बढ़ती है —

आँसुओं में शक्ति। **“नहीं।…….मैं तुम्हें मुक्त करूँगी** —तुम्हारे जैसे हर उस स्त्री को मुकम्मल करूँगी जिसे समाज ने जलाया है। पर नितिन मेरा है। इस जन्म में — और हर जन्म में । उससे इस सब म मत खींचो

मोहिनी की आँखें फैल गईं —शॉक, दर्द, अहंकार, और टूटन… सब एक साथ। आसमां काला हो गया था आंधी चल रही थी| दूर मंदिर की घंटी अपने आप बजने लगी। नितिन आगे आया — हाथ दोनों ओर फैलाए **“आज मैं भाग नहीं रहा। आज मैं किसी को नहीं खोऊंगा। ना मोहिनी… ना माहिरा…इस बार मैं सब बदलूँगा।”**

मोहिनी की चीख — **"तो साबित करो!"** अचानक किसी ने नितिन के कंधे पर हाथ रखा। एक बूढ़ी दबी आवाज़ —**“तुम अकेले नहीं हो, पुत्र।”**

घूमकर देखा —एक वृद्ध साधु (शायद पिछली पीढ़ी का रक्षक) खड़ा था। उसकी आँखें जली अंगार जैसे। हाथ में रुद्राक्ष और जलती राख।

साधु **“आज नहीं… सदियों के इस शाप का अंत आज होगा।” "हर प्रेम को मोक्ष नहीं मिलता… कुछ प्रेम मुक्ति बनकर लौटते हैं।"**

CHAPTER 19:
अंतिम पहर की दहशत

पिछली रात के तूफ़ान के बाद भी गाँव पर अजीब सन्नाटा जमा था। सुबह का सूरज उगा.........लेकिन रोशनी जैसे घरों तक पहुँचने में डर रही थी। नितिन और माहिरा अभी भी घबराए हुई थे| दोनों के चेहरों पर थकावट थी।

माहिरा की साँसें धीमी थीं। आँखें सूजी हुईं, पर अंदर कहीं चिंगारी थी, ऐसी जो डर के बाद भी बुझती नहीं।

नितिन खिड़की से बाहर देख रहा था — हवा में राख सी तैर रही थी, पेड़ों के पत्ते काले-सफेद जैसे राख से ढंके। गाँव में कोई पक्षी नहीं चहचहाया। लगता था जैसे पूरा संसार साँस रोके खड़ा है।

तभी लाठी की ठक-ठक सुनाई दी।

दरवाज़ा खुला —और धीमें कदमों से अंदर आई एक बूढ़ी, मगर दृढ़ आँखों वाली औरत — माहिरा की दादी, शिवकन्या।

सफेद बाल, माथे पर चंदन, हाथ में ताम्र-बेल पत्ती का लोटा। उनकी आँखों में … जैसे बहुत कुछ देखा हो, बहुत खोया हो।

शिवकन्या: **“वो लौटी है… और इस बार खेल छोटा नहीं।”**

माहिरा उनके पास जाती है और पूछती है आप कौन हो ? किससे मिलना है|

तभी शिवकन्या माहिरा के सिर पर हाथ रखे हुए बोलती है………… मैं तुम्हारी दादी हूं तुमने मुझे कभी नहीं देखा मैं तुम्हारे होने से पहले ही साधना करने चली गई थी|

माहिरा की आँखों में आंसू आ गये थे वो अपनी दादी के गले लग गई। नितिन ने उन्हें आदर से नमस्ते की।

दादी (धीमे , गंभीर आवाज में कहा):

"तेरा हिस्सा अब सिर्फ ज़िंदगी नहीं, कर्म का ऋण भी है, बच्ची।"

नितिन ने धीमे स्वर में पूछा, **"क्या… कोई तरीका है उसे रोकने का?"** दादी ने नितिन की आँखों में गहराई से देखा।

उनकी आवाज़ में फुसफुसाहट थी, पर वजन पहाड़ जैसा था — "**मोहब्बत का कर्ज़ खून से चुकता होता है। और मोहिनी… सिर्फ आत्मा नहीं — श्राप है। श्राप को तर्क से नहीं,……. बलिदान से हराया जाता है।"**

कमरा फिर से ठंडा हो गया। शब्द नहीं गिरे, घाव बनकर दिमाग में धंस गए। माहिरा की आँखें भर आईं। **"दादी… नितिन को कुछ होगा?"**

दादी ने उसकी उंगलियाँ पकड़ीं। **"जिसे प्रेम मिलता है, वही परखा जाता है।"** मेरी बहन रुक्मणी की गलती की कीमत इस परिवार ने अपनों को खोकर चुकाई है नितिन की मुट्ठी कस गई। कुछ पल बाद दादी ने गहरी साँस ली, और अचानक बोलीं—

"मुझे तांत्रिक श्रवण को बुलाना होगा।" उस नाम ने हवा में तनाव बढ़ा दिया। माहिरा पीछे हटी — **"वो अभी भी जीवित हैं?"**

“मृत और जीवित का फ़र्क जिनके पास ज्ञान हो… उनके लिए धुंधला होता है।” कुछ ही देर में ……………. लाठी की धक-धक फिर सुनाई दी। एक दुबला, लंबी दाढ़ी वाला, धूनी की गंध से भरा आदमी भीतर आया। हाथ में रुद्राक्ष, आँखें गहरी और भयानक शांत।

तांत्रिक श्रवण।……….उसकी नज़र नितिन पर पड़ते ही उसने आँखें संकुचित कीं— जैसे वो नितिन के भीतर का भार देख सकता हो।

श्रवण (खुरदरी आवाज़ में **):“तू वही है… जो जन्मों को उलझाता है।”** नितिन ने हिम्मत से कहा, **“मैं लड़ने को तैयार हूँ।”** तांत्रिक हँसा नहीं। और बोला— **“लड़ाई नहीं — समर्पण चाहिए”** मोहिनी की आत्मा तुझसे बंधी है। वो छोड़ेगी तो नहीं …… दुनिया को जला कर।

तांत्रिक ने चारों ओर देखा — उसकी उंगलियाँ हवा में कुछ खोज रही थीं। उसने फुसफुसाया— **“यह घर अब सिर्फ आश्रय नहीं… रणभूमि है।”**

दीया अपने आप जल उठा। घंटी खुद बज उठी। खिड़कियाँ टकराईं। और तभी… दूर कहीं से एक स्त्री का स्वर — धीमा, दर्द से भरा, मोहक।

“नीतिन”

उस आवाज़ में जैसे पत्थर भी पिघल जाएँ। लेकिन हर शब्द में विनाश की आहट थी। माहिरा ने नितिन की बाँह पकड़ ली। डर उसकी रंगों में खुली छुरी की तरह दौड़ा। दादी ने तांत्रिक की तरफ देखा — **“समय कम है। शाम तक रक्षा मंडल बनाना होगा।”**

तांत्रिक ने सिर हिलाया और जमीन पर लाल मिट्टी से चक्र बनाना शुरू किया। हर रेखा जैसे हवा को कंपा देती।

दादी मंत्र पढ़ रही थीं। नितिन ने माहिरा की तरफ देखा — वो काँप रही थी। उसने उसके हाथ पकड़ कर कहा— **"मैंने कहा था ना... इस बार हम अधूरे नहीं रहेंगे।"**

माहिरा ने आँसू पोंछे। **"बस... तू साथ रहना। बाकी मैं देख लूँगी।"** एक पल को उनके हाथों का स्पर्श जैसे दुनिया रोक गया।

पर तभी —दीवार पर छाया उभरी। मंदिर की घंटी खुद ब खुद ज़ोर से बजी। तांत्रिक के चेहरे पर चिंता उतर आई— **"वो आ रही है... इस बार दिन में ही।"** दादी ने हड़बड़ी में मिट्टी छिड़की, **"मंडल पूरा नहीं हुआ! वो रोक नहीं पाएगा!"**

बाहर से हवा की चीख —खिड़कियों के शीशे टूटने लगे। अचानक... एक काली लट हवा में तैरती कमरे में दाखिल हुई।

फिर लाल आँखें, फिर सफेद चेहरा —

गुस्से से तड़पती मोहिनी। उसकी आवाज़ गूँजी —

"आज कोई मंत्र, कोई रेखा, कोई जन्म मुझे नहीं रोक पाएगा।"

तांत्रिक ने मंत्र शुरू किया, दादी ने शंख बजाया, माहिरा नितिन के सामने आकर खड़ी हो गई। पर मोहिनी ने सिर्फ नितिन को देखा। कुछ कहा नहीं पर उसकी आँखें सब बोल रही थीं—

"फैसला आज होगा।" घर काँप उठा। दीये फट गए। और हवा में वही फ़ुसफ़ुसाहट भर गई

CHAPTER 20:
“गायब मोहिनी और रहस्य की तस्वीर”

गाँव की रात अचानक और भी गहरी लगने लगी थी। हवा में अजीब बेचैनी थी, अचानक मोहिनी रात में गायब थी।

कमरा खुला मिला, खिड़की हवा में हिल रही थी और लकड़ी की चरमराहट किसी डरावनी तान की तरह सुनाई दे रही थी। गाँव वालों में फ़ुसफ़ुसाहट फैल गई —

“मोहिनी चली गई… हमेशा - हमेशा के लिए।”

औरतें दीये जला रही थीं, बच्चे दरवाज़ों के अंदर छिपे हुए थे, किसी की भी हिम्मत नहीं थी कि वो अकेले बाहर कदम रख सके।

नितिन की आँखों में बेचैनी थी। कुछ अजीब-सा डर, लेकिन दिल के किसी कोने में थोड़ी-सी राहत भी… जैसे कोई बड़ा बोझ उतर गया हो। पर गाँव वाले नहीं जानते थे —

मोहिनी गई नहीं थी। वो बस छुपी थी। इंतज़ार में थी… अपने समय के।

जैसे ही उसकी शक्तियाँ चरम पर पहुँचतीं, वो लौटती… और इस बार नितिन को साथ ले जाने।

इसी बीच गाँव में एक नया चेहरा आया — आरव। शहर का फोटोग्राफर।

वो इस गाँव की रहस्यमयी कहानियों को कैमरे में कैद करने आया था। उसे लगता था कि **हर जगह, हर चेहरे के पीछे एक कहानी छिपी होती है।** और यह गाँव… कहानियों से भरा था। वो इसी कारण बहुत उत्सुक था|

और गाव देखने चला जाता है..... दिन में सब कुछ सामान्य था। आरव ने खेतों, पुरानी हवेली और चौपाल की तस्वीरें लीं।

गाँव बिल्कुल शांति से भरा दिखाई दे रहा था| रात को वह अपने कमरे में लौटा। थकान के साथ मन में उत्सुकता थी, इसलिए कैमरा ऑन किया…और तस्वीरें देखनी शुरू कीं।

लेकिन जो तस्वीरें स्क्रीन पर आईं, उन तस्वीरों में गाँव वैसा नहीं था जैसा उसने देखा था।

तस्वीरों में आसमान काला था, पेड़ सूखे और मुरझाए हुए, चारों तरफ सन्नाटा और हवेली के बरामदे में… एक औरत खड़ी थी। पहले वह धुंधली लग रही थी, पर जैसे ही आरव ने ज़ूम किया—

उसकी आँखें सीधे कैमरे में घूर रही थीं। बाल बिखरे, चेहरा पीला…और होंठों पर जमी थी एक ठंडी मुस्कान। जैसे वो आरव से कुछ कहना चाहती हो| वो कोई और नहीं बल्कि मोहिनी थी।

लेकिन जैसे ज़िंदा नहीं…किसी और दुनिया से आई हुई है अचानक कैमरा स्क्रीन झिलमिलाने लगा। तस्वीर हिलने लगी, मानो फोटो नहीं…

वो औरत खुद हिल रही हो। मोहिनी के होंठ धीरे-धीरे हिले—

"मैं लौट रही हूँ…"

स्क्रीन ब्लैक। कुछ सेकंड बाद तस्वीर गायब।

कमरा एकदम ठंडा हो चुका था…और बाहर से धीमी-सी हँसी सुनाई दी। हवा का झोंका आया, दरवाज़ा धीरे-धीरे खड़का… जैसे कोई वापस आ चुका हो। कुछ पल बाद…कमरा बिलकुल शांत हो गया। स्क्रीन वापस नॉर्मल नज़र आई। जैसे कुछ हुआ ही ना हो। आरव ने काँपते हुए कैमरा बंद किया।

उसका दिल अभी भी तेज़ धड़क रहा था, पर अगले ही मिनट सब कुछ फिर सामान्य हो गया…बाहर की हवा रुक गई, खिड़की अपनी जगह स्थिर हो गई,

और उस रहस्यमयी हँसी की आवाज़ भी ग़ायब। मानो रात ने उस रहस्य को फिर से अपने भीतर छुपा लिया हो। अगली सुबह

सूरज की हल्की किरणें कमरे में से आरव के चेहरे पर पड़ी तो आरव झटके से उठ बैठा। उसे रात की बात एक सपने जैसी लग रही थी…

लेकिन उसका दिल जानता था — सपने जैसे सच कभी कबार होते हैं।

वो बिना देर किए अपना कैमरा उठाकर वहीं भागा जहाँ उसने तस्वीर ली थी। वो खेत, वो पुरानी हवेली का कोना… सब कुछ वैसा ही था।

शांत। साधारण। बिल्कुल नॉर्मल।

“ये कैसे हो सकता है…?”

उसने खुद से कहा। वह तुरंत गाँव के कुछ लोगों के पास गया।

हड़बड़ाया हुआ, बेसब्र, जैसे पागलपन की हद पर हो।

“भाई, ये जगह… कल… यहाँ… मैंने—”

वो बोल ही रहा था कि कैमरा ऑन किया

और वो तस्वीर दिखाने लगा…पर —

जिस फोटो में मोहिनी थी, वो गायब थी।

बाकी सभी तस्वीरें थीं। भी वैसी ही थी जैसे उसने खींचते समय देखी थी| और जिस तस्वीर में मोहिनी दिख रही थी वो तस्वीर तो थी ही नहीं आरव मन ही मन में बोलता है ऐसा कैसे हो सकता है सभी तस्वीरें कहा गई और जो अजीब, डरावनी तस्वीर जहाँ वो औरत उसे घूर रही थी —वो ग़ायब?

जैसे किसी ने उसे मिटा दिया हो। या… जैसे वो कभी थी ही नहीं।

आरव की आवाज़ हिलने लगी — मैंने देखी थी, मैं पागल नहीं हूँ…गाँव वाले उसे अजीब नज़रों से देखने लगे। कुछ फुसफुसाने लगे —

"नया लड़का है… गाँव का असर हो गया लगता है…" यह भी उस नितिन की तरह धीरे धीरे समझ जाएगा| की **इस गाव में जो है वो दिखता नहीं है यहाँ के दिन जीतने शांत होते है रात उतनी ही रहस्यमयी**| बेचारा कहा फंस गया|

आरव बेचैन, डर से पसीना-पसीना, बड़बड़ाता हुआ फिर अपने होटल लौट आया। दरवाज़ा बंद किया,पीठ दरवाज़े से टिकाते ही साँस भारी हो गई।

उसकी आँखें फटी रह गईं —

क्योंकि जैसे ही उसने कैमरा टेबल पर रखा, कमरे के कोने से वही ठंडी, धीमी हँसी फिर गूँज उठी…मोहिनी गायब नहीं थी। वो बस…देखने आई थी कि उसका नया खेल कौन समझ पाया है।

CHAPTER 21:
वापस कौन आया है ?

कमरा शांत था…इतना शांत कि अपनी ही साँसों की आवाज़ आरव को चुभने लगी। उस हँसी के बाद सब कुछ थम चुका था, पर उसके भीतर का डर अभी भी साँस ले रहा था। वो खिड़की के पास जाकर बाहर देखता है —

गाँव यूँ ही साधारण लग रहा था, जैसे यहाँ सदियों से कुछ हुआ ही न हो। पर उसकी आँखों में वो तस्वीर अब भी थी…

वो नज़र…वो स्त्री… जो मुस्कराकर उसे देख रही थी। पर तस्वीर गायब थी। बस याद बाक़ी थी। आरव बुदबुदाया,

“ये जगह साधारण नहीं है… कोई यहाँ खेल खेल रहा है।”

उसी वक्त दरवाज़े पर धीरे से दस्तक हुई —ठक… ठक…

आरव चौंककर मुड़ता है। दरवाज़ा खोलता है — बाहर वीरसिंह खड़ा था।

चेहरे पर थकान… आँखों में कुछ ऐसा जिसे छुपाने की उसने कोशिश की, पर इतना आसान नहीं था।

“सुना है तुमने कुछ देखा? गाँव में बात फैल रही है।”

आरव चुप रहा।

क्योंकि उसे समझ ही नहीं आ रहा था किस पर विश्वास करें और किस पर नहीं गाव में आने के बाद जो कुछ भी उसके साथ हुआ था उससे वो सकपका गया था।

तुम्हारे गाव में जो कुछ भी हो रहा है वो बहुत अजीब है एक पल कुछ दिखता है और दूसरे पल गायब.. शायद ये तुम्हारे लिए भी अजीब हो ये ना नया है और ना ही नॉर्मल तुम जानते हो| ये सब क्या है मुझे बताओ कही ये मेरा वहम तो नहीं है

वीर सिंह की साँस भारी हुई। उसने नज़रें झुका लीं।

वीर (धीमी आवाज): **" इस गाव में कुछ चीज़ें है उन्हें कभी मत छेड़ना वो सिर्फ दिखती नहीं है बल्कि जवाब भी देती है**

आरव वीरसिंह को ध्यान से देखता है —वीर सिर्फ़ डर नहीं छुपा रहा था,

वो किसी पाप का बोझ भी छुपा रहा था।

उसी शाम, माहिरा की दादी आँगन में पीली धूप में बैठी थीं।

हाथ में पुराने बीज थे, जिन्हें वह धीमी फुसफुसाहट में मंत्र बोलकर फूँक रही थीं। माहिरा उन्हें देख रही थी —

चेहरे पर बेचैनी, आँखों में सवाल।

" दादी जो रात को होता है वो क्या है ये सब- मतलब गाव क्यों बदल गया ये कैसी पहेली है

दादी मुस्कराईं नहीं। बस आसमान की तरफ देखा —मानो वहाँ कोई जवाब लिखा हो,

दादी (कंपती आवाज) :

गाव ने एक वादा तोड़ा था और एक आत्मा के इंतज़ार को ललकार था| उसके इंतज़ार को पूरा होने से रोका

जो पूरा नहीं हुआ वो अब फिर से मांगने या यूं कहे की छींनने आई है

माहिरा की रीढ़ में ठंड उतर गई। दादी ने उसकी आँखों में देखकर धीरे कहा—

“ जिसने पहले लिया था वो फिर लेगा”

मायरा ने फुसफुसाया — **“कौन ?”**

दादी ने बस एक शब्द कहा —**“ वो जो प्रेम में धोखा खा गई और हवा अचानक ठंडी हो गई”**

माहिरा के पीछे कहीं दूर दरख़्तों के बीच हल्की परछाई हिली —

इतनी धीमी… जैसे कोई देख रहा हो,

सुन रहा हो… और इंतज़ार कर रहा हो।

रात गहराती है। वीर अकेला बैठा है और उसके हाथ काँप रहे हैं।

वो दीवार पर लगी अपने पुरखों की तस्वीरों की तरफ देखता है — और फुसफुसाता है—

मैं जानता हूँ तुम वापिस आ चुकी हो पर इस बार मैं किसी मासूम को नहीं मारने दूंगा और ना ही अपने परिवार को बिखरने दूंगा|

उसकी आँखों में पानी आ जाता है। वो एक पुराने ताबीज़ कसकर पकड़ता है —

जिसपर खून के सूखे निशान जैसे थे।

इस बार हम गलती नहीं करेंगे उसका वाक्य पूरा ही हुआ था कि

बाहर से एक स्त्री की धीमी हँसी आई —

इतनी कोमल… इतनी मीठी… कि डर दिल में बैठ गया

वीर का चेहरा सफेद हो गया।

आरव रात को नोट लिख रहा है:

"ये गाव समय के जाल में फसा लगता है." "यहाँ सच छुपाया नहीं जाता… छुप कर रहता है" आँखों से परे अचानक कमरे की खिड़की खुलती है…

हवा नहीं आती।

बस पर्दे ही नहीं, दीवार पर लटकी तस्वीर भी हिलती है। और इस बार—

आरव के कैमरे की स्क्रीन अपने-आप ऑन हो जाती है।

डिस्प्ले पे एक धुंधली तस्वीर धीरे साफ होती है…

एक औरत…सफेद साड़ी… बाल खुले……चेहरा शांत पर आँखें—

उसी तरह तड़पती जैसे किसी ने उसका वादा अधूरा छोड़ दिया हो।

इस बार वो मुस्कराती नहीं। धीरे होंठ हिलते हैं—

"वापिस आई हूँ इस बार अपना अधूरा अधिकार लेने।

CHAPTER 22:
सकून का साया

सूरज कई दिनों बाद थोड़ा नरम लगा। हवा में अजीब सी हल्की मिठास थी,

जैसे गाँव ने अपनी सांस रोकने के बाद आखिरकार धीरे-धीरे छोड़ दी हो।

गाँव में ढोलक की आवाज़ गूँज रही थी। वीर सिंह के दूर के चचेरे भाई की शादी थी। लाल-पीले फूल, पीली मिट्टी, और घर-आँगन में गंगाजल छिड़कते हुए … कुछ दिन से… सब शांत था। जैसे कोई तूफ़ान गुज़र गया हो

और अब बस मिट्टी बैठ रही हो। नितिन और माहिरा बरामदे में खड़े थे।

दोनों की आँखों में पहली बार थोड़ी राहत का रंग दिख रहा था।

मायरा (धीरे मुस्कुराते हुए): लगता है सब नॉर्मल हो गया है नितिन ने उसकी तरफ देखा, मुस्कुराने की कोशिश की, पर उसकी आँखें अभी भी थकी हुई थीं।

नितिन: **"हो सकता है………...**

कुछ चीज़ें सिर्फ दिखाई देती हैं, होती नहीं."

माहिरा बस चुप रही। आँखों में थोड़ी उम्मीद, थोड़ी सावधानी लिए।

उसी वक्त दादी बाहर आईं— काली लकड़ी की माला हाथ में।

चेहरे पर शांति… पर आँखों में हमेशा की तरह कुछ छुपा हुआ।

दादी:

“ख़ामोशी कभी कभी अपने साथ जवाब लेकर आती है… और कभी इम्तहान.”

वो बात कहकर दादी धीरे-धीरे चली गई। माहिरा ने हल्की चिंता से नितिन की तरफ देखा— पर शादी के ढोल ने उस पल को काट दिया।

हँसी-ठिठोली, नाच-गाना, गाँव के बच्चे रंगीन पगड़ी पहने दौड़ते फिर रहे थे।

औरतें मेहँदी लगा रही थीं, रसोई में देसी घी की मिठाइयाँ बन रहीं थीं। गाँव सचमुच जिंदा लग रहा था। आरव भी महफ़िल में था। पर बाकी सब की तरह ख़ुश नहीं — बस देख रहा था।

पिछले दिनों का डर अब सवालों में बदल रहा था।

वो खुद से कह रहा था—

“शायद मेरा दिमाग ही खेल खेल रहा था………”

“वह फोटो… वह आवाज़… भ्रम हो सकता है…….”

लोग उसके पास आकर हँसते, बात करते, वो भी हँसने की कोशिश करता। गाँव सच में सामान्य था। हवा साफ़। रातें शांत।

कोई फुसफुसाहट नहीं। कोई ठंडी छाया नहीं।

आरव को लगा—शायद कहानी ख़त्म हो चुकी है।

रात को शादी का सिंगार हो रहा था।

ढोल धीमे बज रहे थे। हल्दी की खुशबू फैल रही थी। मिट्टी पर दीपों की कतारें थीं। बच्चे नाच रहे थे, वही पर माहिरा और नितिन एक-दूसरे से छुप-छुपकर मुस्कुरा रहे थे। और पहली बार कई रातों में — नितिन ने सच में सांस ली।

"हाँ… सब ठीक हो रहा है………" उसने मन ही मन कहा।

लेकिन… शांति भी कभी कभी डर होती है बिल्कुल उसी रात, शादी की चहल-पहले में दादी चुपचाप एक कोने में बैठीं, आँखों पर गीला कपड़ा था|

उनका माथा काँप रहा था। हाथ में वही पुराना ताबीज़।

उन्होंने आसमान की तरफ देखा और फुसफुसाईं—

"तू शान्त हो गयी है… या बस सांस रोक कर देख रही है?"

हवा कुछ सेकंड बिल्कुल रुक गई। दीये की लौ हल्की काँपी।

किसी ने ध्यान नहीं दिया —

सिवाय दादी के।

शादी ख़त्म होने लगी थी । सब अपने घर लौट रहे थे ।

खामोशी फिर उतरी गाँव पर—

पर आज वो खामोशी भारी नहीं थी। बस शांति थी।

आरव अपने कमरे में गया। बैठा और गहरी सांस ली।

आरव (सोचते हुए):

“हो सकता है… मैं पागल हो रहा था. It was just fear.”

उसने कैमरा उठाया। स्क्रीन ऑन की। स्क्रीन नॉर्मल थी।

उसने खुद को आईने में देखा।

थकान थी……. पर कोई डर नहीं।

“बस… हो गया.”

वो मुस्कुरा दिया। रोशनी बंद की। सोने को लेट गया।

कमरा शांत था। पंखा बस धीरे घूम रहा था।

अचानक — खिड़की के बाहर कहीं दूर एक बेहद धीमी आवाज़ आई।

संगीत जैसा नहीं, रोने जैसा नहीं…बस जैसे कोई थोड़ी-सी हँसी नाक के अंदर दबाकर हँसता हो।

इतनी हल्की थी कि उसे यकीन नहीं हुआ सच में सुना या कल्पना थी।

लेकिन ये हँसी डराने वाली नहीं थी… बल्कि किसी इंतज़ार जैसी थी।

आरव ने आँखें खोलीं। खिड़की की तरफ देखा। वहाँ कुछ नहीं था।

उसने आँखें बंद कीं।

गहरी साँस ली। और तभी—

अंधेरे में बहुत हल्की फुसफुसाहट हुई

“ वक़्त आ रहा है…” आरव की आँखें फिर खुल गईं।

दिल धड़क उठा।

खिड़की पे चाँद की हल्की रोशनी पड़ी। उस रोशनी में जाली पर…

सिर्फ़ एक पानी की बूंद चमकी — जो खुद-ब-खुद टपक गई थी।

बस इतना।

और फिर से साइलेंट.

CHAPTER 23 :
सपनों का दरवाजा

अगली सुबह सूरज उतनी ही नर्मी से उगा, जैसे रात ने उसकी किरणों को थामकर कहा हो —

धीरे आना… कोई अभी भी सो रहा है।

गाँव जाग रहा था, पर अजीब बात ये थी —

किसी को याद ही नहीं था……. कि शादी में किसने क्या पहना था।

लोग बस ये कह रहे थे —

“सब ठीक हो रहा है.”

“शायद वह वक़्त बीत गया…”

पर कुछ चेहरों पर एक हल्की थकान थी … जैसे रात ने उनके सपनों को सोने नहीं दिया था।

नितिन नींद से उठा, पर उसके चेहरे पर एक अजीब सन्नाटा था।

माहिरा ने पूछा—

“ठीक हो? आज सूरज को देख कर भी ख़ुशी नहीं हुई?”

नितिन ने सिर हिलाया। शब्द जैसे गले में अटक गए हो ……..वो बस इतना बोला—

“रात... अजीब थी.”

माहिरा मुस्कुराई,

उसे गले लगाया और बोली— **“बस कुछ दिन... फिर सब नॉर्मल.”**

मगर नितिन की आँखों में नॉर्मल अब बहुत दूर था। आरव बहुत देर तक बिस्तर पर लेटा रहा।

नींद टूटी थी — पर शरीर थका नहीं था...

दिल थका था। उसने खुद से कहा—

“यह सब दिमाग का खेल था... हाँ... हो सकता है.......”

पर उसके चेहरे पर वो भरोसा नहीं था......जो उसके शब्दों में था।

वो उठने ही वाला था बिस्तर के नीचे से धीमी-सी ठंडी हवा आई...

बिल्कुल वैसी, जैसे रात किसी खिड़की को अधखुला छोड़ दे।

उसने नीचे झाँककर देखा। तो अंधेरा। बस अंधेरा। और कुछ नहीं। या शायद पर कुछ था। उसे फिर लगा —

किसी ने उसे देखा।

रात फिर आई। इस बार गाँव की हवा भारी नहीं थी,

बस चुप थी।

नितिन सोया।

आरव भी।

और फिर शुरू हुआ — वही खेल, जो सिर्फ़ रात जानती है।

नितिन अपने सपने में खुद को पुराने जमाने के गाँव में खड़ा देखता है।

हल्की धूप, सुखी मिट्टी, गाँव वैसा ही… पर मौसम अलग।

फूलों की पंखुड़ियाँ हवा में तैर रही थीं—

एकदम सफेद।

एक लड़की उसके सामने खड़ी थी। चेहरा साफ़ नहीं…

बस आँखें। वो आँखें… मोहिनी की आँखें।

पर इस बार उनमें जहर नहीं था—बस दर्द था। वो धीरे कहती है—

“तुमने वापस आने का वादा किया था.”

नितिन जवाब देता है— “मैं आया तो हूँ.”

लड़की मुस्कुराती नहीं, बस सिर झुकाकर कहती है—

“इस जनम में नहीं… उस जनम में” चारों तरफ़ हल्की धुंध फैलती है।

एक मंदिर जैसा आकार दिखता है।

घंटी बज रही है — धीमी, टूटी हुई। और फिर—

एक हाथ, लाल चूड़ियों वाली, उसके हाथों को पकड़ती है।

“इस बार… तुम मुझे छोड़ नहीं पाओगे.”

उसका हाथ जम जाता है। उसकी सांस रुक जाती है आरव को लगता है वो अपने कमरे में है।

सब वही।

दीवारें, कैमरा, खिड़की। बस एक चीज़ अलग थी— कमरा सांस ले रहा था।

दीवारें धीमें -धीमें बाहर–अंदर हो रही थीं जैसे जीवित हों।

धक … धक … धक … धड़कन कमरे की थी या उसकी — ये समझना मुश्किल था। उसे दरवाज़े पर कोई दिखा। कोई खड़ा था —

सफेद पर्दे के पीछे छाया।

चेहरा नहीं दिखा , पर बाल… खुले हुए, हवा में नहीं — छाया में तैरते हुए।

"तुम्हारे दिमाग में डर नहीं……… यादें जाग रही हैं."

आरव वहाँ से भागना चाहता है, पर पैर नहीं हिलते।

एक कदम छाया आगे बढ़ती है। खिड़की अपने आप खुलती है।

पर हवा नहीं आती— बस सुन्नी ठंड। और फिर धीरे -धीरे कान में आवाज़:

"वह वापस नहीं आयी… वह कभी गई ही नहीं."

आरव एक दम से बिस्तर पर उठकर बैठ गया उसका पूरा शरीर पसीने में भीग गया था पर कमरे में हल्की चंदन की खुशबू है— जो सपने में थी।

सुबह। गाँव फिर सामान्य लगता है।

पर नितिन की आँखों के नीचे गहरा नीला साया है। आरव का चेहरा उतरा है।

माहिरा की दादी उन्हें देखती हैं और धीमें - धीमे मुस्कुराती हैं…

वो मुस्कान दया की नहीं थी— पहचान की थी।

दादी**: "यादें खुलना शुरू हो गयी हैं."**

नितिन (काँपती आवाज़): **"कौन सी यादें ?"**

दादी झुककर मिट्टी उठाती हैं, हवा में छोड़ती हैं।

मिट्टी उड़कर गायब हो जाती है।

"जो धूल बन कर भी गायब नहीं होती." "जिन जिन्दगियों ने मौत के बाद भी इंतज़ार किया हो …"

नितिन और आरव एक-दूसरे को देखते हैं।

डर नहीं — बोध थे जैसे उन्हें कुछ समझ ही ना आया हो उनके चेहरे पे शिकन साफ देखी जा सकती थी ………कहीं कुछ…………जाग गया है।

और मोहिनी?

वो अभी भी शांत है। बस इंतज़ार कर रही है

कि कौन पहले याद करेगा— वादा? या धोखा?

रात को एक हल्की हवा चलती है— और बस इतना सुनाई देता है:

"सपने शुरू हो गए

अब यादें जागेगी"

CHAPTER 24:
समापन या शुरुआत?

“अब खेल और गहरा होगा...”
उस रात माहिरा की दादी ने धीरे से कहा था। और सच में —रात ने अपनी साँसें रोक ली थीं।
पूरे गाँव में एक अजीब-सी खामोशी छाई थी... ऐसी खामोशी जिसमें दूर से आती हवा भी मानो किसी मरे हुए राग की तरह लग रही थी।

अगली रात, जब सब सो चुके थे, नितिन का शरीर अचानक काँपने लगा।
जैसे किसी अदृश्य रस्सी ने उसकी कलाई पकड़ बाँध लिया हो।
उसकी आँखें खुलीं... पर होश जैसे गायब।

धीरे-धीरे, वह दरवाजे से बाहर निकला।
पैर खुद-ब-खुद चल रहे थे।

माहिरा की दादी, जो उस रात ताबीज भर रही थीं, सबसे पहले सुन पाईं—

“बचाने की कोशिश मत करना...”
एक फुसफुसाहट... हवा की नहीं... किसी परछाईं की थी।

दादी की साँस अटक गई।

वे चीखी— “**नितिन रुक!**”

पर नितिन किसी समोह में आगे बढ़ चुका था...
गाँव के पुराने कुएँ की ओर—वही स्थान जो सालों से बंद था। आधे गाँव वालो ने तो उस जगह को कभी देखा भी नहीं था |

जहाँ कभी आग नहीं जली- आत्मा कहानी फुसफुसाई जाती थी। घडी उलटी चलती है चमगादड़ रोते है और फूल काले हो जाते है

माहिरा, वीर सिंह, दादी, गाँव के लोग और तांत्रिक—
सब नितिन के पीछे दौड़े।

कुएँ के पास पहुँचकर वे थम गए। हवा अचानक ठंडी हो चुकी थी। इतनी ठंडी कि साँस धुंध बनकर उठ रही थी। और तभी—

चमकदार सफ़ेद धुआँ कुएँ से उठा।
धीरे-धीरे… किसी स्त्री की आकृति बनने लगी।

पहले बाल…फिर कंधे…
फिर आँखें… और फिर धीरे धीरे पूरी दिखनी लगी

मोहिनी लेकिन इस बार… वह वैसी नहीं थी जैसी दिखती थी—
उसका रूप लगभग **'पूरा'** था। उसकी शक्ति चरम पर थी। इस बार वो अपना अधुरा बदला लेके रहेगी जो उसके रास्ते में आएगा उसे अपनी जान गवानी पड़ेगी

तांत्रिक चीखा—
"सब पीछे हटो! मंत्र शुरू मत होने देना इसे!"

लेकिन मोहिनी की आँखें सिर्फ *नितिन* पर थीं।

"तूने कहा था… इस जन्म में अपनाएगा…" उसकी आवाज़ मानो चार दिशाओं से गूँज रही थी। **"तो आ साथ चल।"**

लेकिन उसी क्षण माहिरा की दादी आगे बढ़ीं।

उन्होंने अपनी कमर के कपड़े में छुपा हुआ **मंत्र-पत्र** निकाला—
वह मंत्र जिसे सुनना भी पाप कहा जाता था।

उन्होंने मंत्र बोलना शुरू किया—
धीमा… काँपता हुआ… पर प्रचंड:

"ॐ अग्नि-शक्ति प्रकट भव…" धरती हिलने लगी। मोहिनी पीछे हट गई। उसका चेहरा क्रोध से भर उठा।

"तूने ये मंत्र क्यों बोला दादी?" वीर सिंह चिल्लाया। दादी लगभग रो पड़ीं—
"क्योंकि ये मंत्र आत्मा को रोकता नहीं… उसे उकसाता है। वो और शक्तिशाली होती है।"

भीड़ में एक और चेहरा था—*आरव*।
जो पिछले कुछ समय से गाँव को सिर्फ एक अनुभव की तरह समझ रहा था।

वह सब रिकॉर्ड कर रहा था,
जैसे अब भी मान रहा हो कि ये सब *वहम* है।

आरव ने कुछ महसूस किया— एक ठंडी उँगली जैसी किसी ने
उसके कंधे के पीछे हल्के से छुई हो।

वह पलटा। कोई नहीं था।

लेकिन कैमरे की स्क्रीन झिलमिलाई।
पहले स्टैटिक …

फिर अचानक फ्रेम खुद-ब-खुद ज़ूम हुआ
और दिखा—

एक चेहरा।
सफेद... धुएँ जैसा...
और ओठों पर एक पहचानी-सी मुस्कान।

आरव ने आँखें झपकीं। चेहरा गायब। किसी और को ये नहीं दिखा था। बस उसे। पर अचानक.......मोहिनी की निगाहें उसकी ओर घूमीं।

और उसी पल—

आरव का कैमरा खुद-ब-खुद ऑन होकर ज़मीन पर गिरा...
लेंस में सिर्फ *आग* दिखाई दी।

मोहिनी फुसफुसाई—

"पहचाना मुझे... आर्यम?" सब चौंक गए।
"आर्यम"?
ये नाम आरव ने कभी नहीं सुना था। आरव लड़खड़ाया—
"आरव कँपकँपाती आवाज़ में बोला—
"अर-आर्यम कौन है?
मैं आरव हूँ... बस आरव।"

मोहिनी चीखी—

नाम बदले जा सकते हैं...पर आत्मा नहीं।
वक्त नहीं।
कर्म नहीं।"

"क्योंकि तू वही है... जिसने मुझे जिंदा जलाया था!"
"इस जन्म में आरव... पर पिछले जन्म में वही आर्यम जिसने मेरे बचने की गुंजाइश भी नहीं छोड़ी।"

भय की एक गूँज भीड़ में फैल गई।

कुएँ के पास खड़ी भीड़ ने जैसे सामूहिक रूप से साँस रोक ली थी।

मोहिनी सामने थी—

उसका रूप अब इंसानी कम, आग से जला हुआ धुआँ ज़्यादा था।
पर आँखें...
आँखें अब भी वैसी ही थीं—
किसी छले हुए प्यार की,
किसी अधूरे वादे की,
किसी अधूरी मौत की।

लेकिन उस रात हवा में कुछ और भी था—
अंत की आहट।

माहिरा की दादी हुआ मंत्र बोल चुकी थीं। नितिन समोह से बाहर आने की कोशिश कर रहा था। वीर सिंह आँखों में आग छुपाए खड़ा था।
तांत्रिक अपने हाथों में रक्षा-चक्र बनाकर मंत्र को स्थिर रखने की कोशिश में था। और
अब गाँठ खुल चुकी थी।
उसके अंदर का **'अतीत'** उसकी आँखों में तैरने लगा था। मोहिनी की नज़रें उसी पर गड़ी थीं।

तांत्रिक ने काँपते हुए मंत्र का तेज स्वर उठाया—

“ॐ काल भैरवाय नमः… आत्मा-बँधन स्तंभन मंत्र…”

जैसे ही मंत्र शुरू हुआ, चारों ओर की हवा अचानक भारी हो गई।
पेड़ों के पत्ते स्थिर हो गए। कुआँ गहरा काला दिखने लगा—
मानो उसकी तली में कोई सो रहा हो, जिसे अब जागना नहीं चाहिए।

मोहिनी की आँखें पल भर के लिए सिकुड़ीं।
उसने हवा में हाथ उठाया— और अचानक
चारों दिशाओं में मानो कोई अदृश्य दीवार बन गई।

मंत्र हवा में जमने लगा…
पर उसी क्षण— **धाड़!!!** कुएँ के अंदर से एक काली लपट उठी
और मंत्र हवा में चूर हो गया।

तांत्रिक चीख पड़ा,
उसका शरीर पीछे फेंक दिया ।
उसकी पीठ जमीन से टकराई और वह वहीं गिरकर हाँफने लगा।

“मैं … मंत्र नहीं पकड़ पा रहा… ये आत्मा अब पूर्ण हो चुकी है…”

वीर सिंह आगे बढ़ा—
उसने अपनी जेब से एक पुराना ताबीज निकाला,
जो उसके बाप-दादा से मिला था।

“बस! अब बहुत हुआ!
तूने हमारा गाँव बरबाद किया…
अब तुझे जाने नहीं देंगे!”

मोहिनी ने उसकी तरफ देखा।
उसकी मुस्कान बहुत धीमी… बहुत ठंडी थी।

"तुम लोग अपनी सीमाएँ भूल गए हो।
मेरी लड़ाई तुमसे नहीं…
उससे है।"

और उसकी उँगली सीधे—
आरव की ओर उठी। आरव पीछे हट गया।
पसीना उसके चेहरे से टपक रहा था,
लेकिन उसके भीतर कुछ और भी जाग रहा था—एक बीता हुआ जन्म,
जो अब आँखों की गहराई में उभरने लगा था।

अचानक उसके सामने दुनिया धुंधली होने लगी।
कुएँ की जगह किसी पुराने कच्चे घर की छवि दिखने लगी।
भीड़ की जगह औरतों की चीखें। लपटें।

धुआँ। और वह खुद—
आर्यम। हाँ…
लंबे, घने बाल,
धूल से भरा चेहरा,
हाथ में मशाल…

और सामने—मोहिनी। इसी रूप में नहीं। एक इंसान की तरह।
एक औरत की तरह। एक प्रेम की तरह।

वह रोते हुए कह रही थी—

“आर्यम... मुझे मत जलाओ...
मैंने कुछ नहीं किया...”

लेकिन भीड़ चिल्ला रही थी—

“चुड़ैल! चुड़ैल!”
“गाँव में मरेंगे लोग!”
“इसे खत्म करो!”

आर्यम—
एक क्षण के लिए रुका था।
उसके दिल ने उसे रोकने की कोशिश की थी।
पर भीड़ की आग
उसके भीतर की आवाज़ से तेज़ थी।

उसने मशाल उठाई—
मोहिनी का चेहरा सदमे से सख्त हो गया। और लपटों ने सब निगल लिया।

आरव के शरीर से एक दर्द भरी चीख निकली—
इतनी गहरी कि पूरा कुआँ गूँज उठा।

“नहीं! मैंने ऐसा क्यों किया!”

वह घुटनों पर गिर गया। उसके हाथ काँप रहे थे जैसे उसके हाथों में फिर से वही मशाल हो।

मोहिनी धीरे-धीरे उसके पास आई। उसने उसका चेहरा पकड़ा—
स्पर्श ठंडा... पर भारी।

“इसलिए… इस जन्म में भी मैं लौटकर आई।
वादा पूरा करने।”

दादी चिल्लाईं—
“नितिन!! अभी रोक उसे! वरना आरव बच नहीं पाएगा!”

नितिन जैसे समोह से बाहर फूट पड़ा। उसने अपनी पूरी ताकत से आरव की बाँह पकड़ ली—
लेकिन एक तेज़ झटका लगा और नितिन दूर जा गिरा।

उसके हाथ में जो जन्म-जन्मांतर का निशान था
चमकने लगा—सफेद रोशनी में।

दादी ने देखा और दंग रह गईं।

“वह निशान… पुरानी आत्मा का बंधन था।

अगर मोहिनी आरव को ले गई—
तो नितिन मुक्त हो जाएगा।
और गाँव भी…”

वीर सिंह समझ गया— नितिन उस कहानी का ‘दूसरा छोर’ था।
कभी बाँध
कभी ढाल
कभी दंड

और आज— वह बंधन टूटने वाला था। पूरा आसमान अचानक हल्का लाल हो गया। मानो घड़ी ने मौत का समय बता दिया हो।

मोहिनी ने आरव का हाथ पकड़ा। उसकी आँखें अब नरम थीं…
दुख से भरी… पर शांत भी—
जैसे उसे आखिर वह मिल रहा हो जो उसने जन्मों-जन्मों तक चाहा था।

"इस बार… कोई मुझे नहीं रोकेगा।"

दादी चिल्लाईं—
"अगर तू उसे ले गई—
तो इस गाँव का संतुलन टूट जाएगा!"

मोहिनी ने पीछे मुड़कर कहा—

"संतुलन जब-जब टूटता है…
तो कोई न कोई जन्म लेता है उसे पूरा करने।
इस बार… मेरा जन्म पूरा हुआ है।"

फिर उसने आरव की ओर देखा।

"चलो, आर्यम।
अब आग नहीं…
बस ख़ामोशी होगी।"

एक सफेद धुआँ उठा। हवा भंवर की तरह घूमी। कुएँ के ऊपर आकाश फटने जैसा लगा। चारों ओर अँधेरा, सफेद रोशनी, धुआँ, चीखें, मंत्र—
सब एक साथ घुल गए।

और अगले ही क्षण—
आरव और मोहिनी… गायब।
जैसे रहे ही नहीं हों।

सन्नाटा। पूर्ण सन्नाटा।

सिर्फ हवा बची थी।
और वह भी बहुत थकी हुई।

मोहिनी के गायब होते ही वह सफेद चमक जो नितिन के हाथ पर थी धीरे-धीरे बुझ गई।

नितिन काँपते हाथों से अपनी कलाई देखने लगा—

निशान गायब था।
पूरी तरह।

वह रो पड़ा। वीर सिंह ने उसे गले लगाया—
उन दोनों की आँखों में राहत के आँसू थे।

दादी ने काँपती आवाज़ में कहा—

"अधूरा वादा पूरा हुआ।
अब गाँव पर लगा ऋण उतर गया है।"

तांत्रिक मुश्किल से उठा।
उसने चारों ओर देखा—
वातावरण सामान्य। हवा में कोई भारीपन नहीं।
कुआँ शांत।
धरती स्थिर। उसने कहा—

"जो लेना था... ले गई।
अब डर नहीं बचेगा।"

गाँव की सुबह वैसी थी जैसे किसी ने रात को 'रीसेट' कर दिया हो।

चिड़ियाँ चहक रही थीं। बच्चे खेल रहे थे।
बूढ़े लोग चौपाल में बैठे थे।

कोई बोल रहा था कि कल रात इस गाँव का इतिहास बदल गया।

लोगों को लग रहा था— आरव शहर लौट गया है।
किसी ने उसे कार में जाते देखा था। (असल में वह कोई भ्रम था—एक छाया।)

सच क्या था,
किसी ने जानने की कोशिश नहीं की।

सिवाय चार लोगों के—
नितिन, माहिरा, वीर सिंह और दादी। वे जानते थे—

आरव कहीं नहीं गया। उसे ले जाया गया था।

और अब उसके पीछे कोई सवाल नहीं बचे थे।
कोई श्राप नहीं बचा था। कोई वादा नहीं बचा था।

सिर्फ गाँव बचा था। और एक कहानी…
जो अब बंद हो चुकी थी।

या शायद—

किसी और जन्म में ....फिर से खुलने के लिए सो रही थी।